



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र



• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 46 • 21-27 अगस्त, 2023

• प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 19-8-2023 • पेज: 12 • ₹10

भिक्षु वाणी

साथ आवे पुण्य नें पाप,
सुख-दुख भोगवे आपो
आप
संचित पुण्य और पाप
साथ चलते हैं, उनसे
अपने आप सुख-दुःख
मिलता है।

आलोचना-प्रायश्चित्त करने वाला बन सकता है आराधक : आचार्यश्री महाश्रमण

१२ अगस्त २०२३
नन्दनवन, मुम्बई

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आगम में आराधना-विराधना के सन्दर्भ में बात बताई गई है। एक भिक्षु-साधु है, उसके साधुपन में कोई दोष या अकृत्य हो गया है। उस दोष की आलोचना प्रतिक्रमण किये बिना वह कालधर्म को प्राप्त हो जाता है तो उसके आराधना नहीं होती, वह विराधक हो जाता है। जो साधु उस दोष की आलोचना-प्रतिक्रमण कर चिरकाल धर्म को प्राप्त करता है तो उसके आराधना हो जाती है।

एक साधु ने किसी दोष का सेवन कर लिया, वह सोचता है कि मैं अभी तो आलोचना नहीं करूंगा। मैं चरमकाल-आयुष्य पूरा होने के निकट इसकी आलोचना-प्रतिक्रमण कर लूंगा, विशुद्धि कर लूंगा, पर आयुष्य का तो पता नहीं। वह बीच में ही कालधर्म को प्राप्त हो जाता



है, तो उसके आराधना नहीं होती है।

एक साधु जिसके कृत्य स्थान का दोष हो गया, वह सोचता है कि गृहस्थ श्रावक भी तो कालधर्म प्राप्त कर देवलोक में पैदा होते हैं। मैंने गलती तो की है, पर मुझे भी देवलोक में कहीं तो स्थान मिल

सकेगा। उसको आराधना प्राप्त नहीं होती। यह प्रसंग चरित्रात्माओं को एक विशेष दिशा-निर्देश देने वाला है कि कृत दोष का सेवन कर आलोचना-प्रतिक्रमण न करने वाला विराधक है और आलोचना-प्रतिक्रमण करने वाला

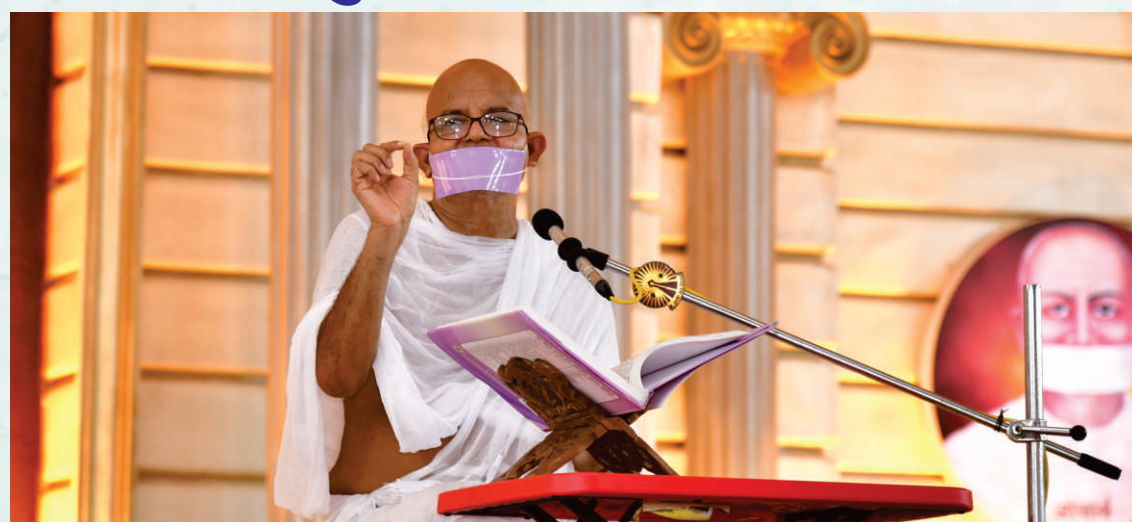
आराधक बन सकता है। समय पर अपना काम हो जाये, बाद का कुछ पता नहीं लगता, क्या स्थिति बन जाये पता नहीं। जो भी दोष लग जाये तो तुरन्त आलोचना-प्रायश्चित्त गुरु से ग्रहण कर उसका निर्वहन कर लें।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए पूज्य कालूगणी की स्वास्थ्यगत स्थिति एवं आचार्यश्री कालूगणी की समताभाव और सहनशीलता को व्याख्यायित किया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि क्रोध-प्रीति का, मान-विनय का, माया-मित्रता का और लोभ सबका विनाश कर देता है। लोभ कषाय दसवें गुणस्थान तक रहता है जबकि तीन कषाय उससे पहले नाश को प्राप्त हो जाते हैं। लोभ पाप का बाप है। लोभ को क्षय किये बिना मुक्ति नहीं मिलती। वेदनीय कर्म के उदय से आत्मा में होने वाली इच्छा-लालसा लोभ है। लोभ कषाय से युक्त व्यक्ति अनर्थकारी प्रवृत्ति कर सकता है।

उदयपुर के सांसद रघुवीर मीणा ने पूज्यवर के दर्शन किये एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यवर ने भी आशीर्वचन फरमाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आगम वाणी सुनने से भी हो सकता है वैराग्यभाव का विकास : आचार्यश्री महाश्रमण



०९ अगस्त २०२३
नन्दनवन मुम्बई

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र के नौवें दशक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर जब विराजमान थे, उस समय ब्राह्मण कुंड ग्राम का नगर था। वहां बहुशालक चैत्य भी था। उस नगर में एक

ब्राह्मण था, जिसका नाम था- ऋषभदत्त। वह वेदों का ज्ञाता था। वह श्रमणोपासक था। जीव-अजीव को जानने वाला था। वह अपना तप कर्म भी करता रहता था।

उस ब्राह्मण की भार्या का नाम देवानन्दा था। वह भी तपस्या करती रहती थी। ऋषभदत्त को ज्ञात हुआ कि भगवान महावीर इस ब्राह्मण कुंड के पास ही

पधारे हैं। वह अपनी भार्या को साथ लेकर भगवान के दर्शन करने गये। भगवान के दृष्टिगोचर होते ही वे गरिमापूर्ण तरीके से वन्दना कर रहे हैं। दर्शन करने के बाद देवानन्दा को अपार हर्ष हुआ और उसके स्तनों से दूध की धार बह चली। आंखों से आंसू भी आने लगे।

यह दृश्य देख गौतम स्वामी भगवान

से बोले कि भन्ते! यह जो बहन श्राविका बैठी है, इसके स्तन से दूध की धार बह रही है, आंखों से अश्रु धारा बह रही है, वह इतनी हर्षोल्लासित कैसे हो रही है? वह आपको त्राटक हो अनिमेष देख रही है। भगवान बोले- गौतम! यह श्राविका देवानन्दा मेरी माता है। इसलिए वह इतनी हर्षातिरेक हो रही है। यह मां का ममत्व भाव है।

भगवान की दो माताएं थीं। मूल माता-पिता तो देवानन्दा और ऋषभदत्त ही थे। बाद में गर्भ संहनन कर त्रिशला की कुक्षी में गर्भ को स्थापित किया गया था। आगम वाणी एवं प्रवचन श्रवण से जागृति-वैराग्यभाव का विकास हो सकता है। ऋषभदत्त ने भी प्रभु की वाणी सुनकर हाथ जोड़ प्रभु से कहा कि आपने जो फरमाया वह ही सही है।

ऋषभदत्त के मन में वैराग्य भाव आये। वह अपने गहने, कपड़े उतार देता

है। सिर का लोच कर भगवान के चरणों में पहुंच जाता है। भगवान से बोले कि इस संसार में तो कष्ट भरे हैं, आग लगी है, अनेक कष्ट हैं। मैं इस संसार से निकलकर दीक्षा लेना चाहता हूं। भगवान ऋषभदत्त को मुंडित कर दीक्षा प्रदान कर शिक्षा भी प्रदान करते हैं। दीक्षा ग्रहण कर ऋषभदत्त आगमों का अध्ययन कर तपस्या से अपने को भावित करता हुआ केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष चला जाता है।

देवानन्दा भी भगवान से दीक्षा ग्रहण कर लेती है। भगवान देवानन्दा को चन्दनबाला को सौंप देते हैं। दोनों का कल्याण हो गया।

इस घटना से यह जाना जा सकता है और प्रेरणा ली जा सकती है कि माता का पुत्र के प्रति कितना स्नेह भाव होता है। मां तो मां ही होती है। मां की ममता बड़ी निर्मल होती है।



साधना के द्वारा इन्द्रियातीत बनने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

07 अगस्त 2023

नन्दनवन

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की व्याख्या कराते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में छह द्रव्य बताये गये हैं- धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय। इन छहों में एक है- पुद्गलास्तिकाय। पुद्गल जो हमें दिखाई देते हैं, वे अजीव हैं, मूर्त हैं। परमाणु भी पुद्गल हैं।

प्रश्न किया गया है कि जीव पुद्गली है, पुद्गल है। उत्तर दिया गया कि जीव पुद्गली भी है, पुद्गल भी है। जीव को पुद्गल कहा जाना नई बात हो सकती है, सामान्य भाषा में जीव अमूर्त है, पुद्गल मूर्त है। सिद्धों की आत्मा भी पुद्गल है। इन्द्रियों की अपेक्षा से जीव को पुद्गली भी कहा जा सकता है। संसारी चारों गतियों के जीवों के इन्द्रियां होती हैं, इसलिए वे पुद्गली ही कहलाते हैं।

छत्र जिसके पास है- वह छत्री, दंड जिसके पास है- वह दंडी, घट जिसके पास है- वह घटी, पट जिसके पास है- वह पटी और कर (हाथी की सूंड) जिसके पास है- वह करी कहलाता है। वैसे ही जीव इन्द्रियों की अपेक्षा से पुद्गली कहलाता है। सिद्ध भगवान पुद्गल ही है। उनके इन्द्रियां नहीं होती।

पांच प्रकार की इन्द्रियों का वर्णन किया गया है- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय। इन पांच इन्द्रियों में श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरेन्द्रिय हमारे ज्ञान की सक्षम माध्यम बनती है। मेरे शब्द आप सब के कानों में पड़ते हैं तो कितनी जानकारी मिल सकती है। आंखों से देखकर हम कितना जान लेते हैं। अन्य इन्द्रियों के माध्यम से ही ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है। जीव की वह अवस्था परम अवस्था होती है, जहां वह इन्द्रियों से मुक्त हो जाता है। साधना के द्वारा इन्द्रियातीत सिद्ध अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। पूज्यवर ने कालूयशोविलास का सुन्दर विवेचन करते हुए वड़नगर मर्यादा महोत्सव के प्रसंग को समझाया। लम्बी तपस्याओं के क्रम में प्रकाश परमार ने ३८, हेमलता पोखरना ने ३०, सारिका बड़ाला ने २८ एवं निधि कोठारी ने १५ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञानशाला में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम

बारडोली

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा तेरापंथ भवन बारडोली में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

साध्वी सोमयशजी की सन्निधि में कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण ज्ञानशाला प्रशिक्षिकागण बारडोली द्वारा किया गया। अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने अपना वक्तव्य प्रदान कर ऊर्जा का संचार किया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष संजय बडोला, मंत्री राहुल सामरा, निवर्तमान अध्यक्ष साहिल बाफना, परामर्शक महावीर दक, संजय एल बडोला, पीयूष बाफना, कार्यक्रम के संयोजक अंकुर मेहता, मुदित मेहता, ज्ञानशाला संयोजक पंकज बाफना, उत्सव मेहता, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका दिव्या सिंघवी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष धर्मिष्ठा मेहता की उपस्थिति रही।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

शाहीबाग, अहमदाबाद

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षा वाहिनी शाहीबाग अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज के संयुक्त प्रयास से तेरापंथ भवन के ध्यान कक्ष में पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि कुलदीपकुमारजी के मंगलपाठ से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत हुई। प्रेक्षा प्रशिक्षक लाजपतराय जैन, हांसी (हरियाणा) द्वारा प्रेक्षाध्यान, अनुप्रेक्षा, यौगिक क्रियाएं, आसन, प्राणायाम के प्रयोग कराते हुए आध्यात्मिक-वैज्ञानिक आधार पर प्रकाश डालते हुए शरीर विज्ञान की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने कहा कि प्रेक्षाध्यान व योग को हमारे जीवन की नियमित प्रयोगशाला बनाएं तो सुख और शांति का राजमार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

त्रिपदी वंदना प्रेक्षा प्रशिक्षक धर्मेन्द्र कोठारी द्वारा करवाई गई। प्रेक्षा गीत का संगान विमल बाफना ने किया। तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज ने स्वागत भाषण करते हुए प्रेक्षाध्यान को मानव जाति के लिए महान वरदान बताया। प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने बताया कि आधि, व्याधि, उपाधि की मुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान महत्वपूर्ण उपक्रम है जो समाधि अर्थात् चैतन्य का अनुभव कराती है। आभार ज्ञान धनराज छाजेड़ ने किया। तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने मंगल भावना करवाई। कार्यक्रम का संयोजन जवेरीलाल संकलेचा ने किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक लाजपतराय जैन का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

सब सुखी बनें, सब रोग मुक्त बनें

कांकरोली

शासनश्री मुनि रविंद्रकुमारजी एवं मुनि अतुलकुमारजी के सान्निध्य में प्रेक्षावाहिनी के अंतर्गत 'सब सुखी बनें, सब रोगमुक्त बनें' कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि अतुलकुमारजी ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कौन कहता है कि जीवन में बदलाव संभव नहीं। बदलाव जीवन का सत्य है। इसलिए बदलाव की संभावना से जुड़ें। अशुभ विचार, व्यवहार, संस्कार बदलने का वह पुरुषार्थ करें, जो हमारे विकास एवं सुख शांति में बाधक बन रहे हैं, मन में नकारात्मक भाव जगा रहे हैं। मन की बीमारी जितनी सताती है, उतनी शरीर की बीमारी नहीं सताती। सब कुछ पास में है किंतु मन की स्थिति गड़बड़ाने के कारण उनके लिए कुछ भी नहीं है। ज्यादा गुस्सा-तनाव की स्थिति में भोजन करने से रोग का खतरा बढ़ता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव एक आम समस्या बन चुका है। छोटे से लेकर बड़े तक आज हर तीसरा व्यक्ति इस समस्या से जूझ रहा है। तनाव की स्थिति कब होती है, जब हम दवाब लेने लगते हैं और जीवन के हर पहलू पर नकारात्मक रूप से सोचने लगते हैं। अधिक तनाव के कारण हृदय रोगों के मामले काफी सामान्य हैं।

लंबे समय तक तनावग्रस्त रहने वाले लोगों में हाई बीपी, हृदय की बीमारियों का खतरा अधिक हो सकता है। हार्ट डिजीज के बढ़ते मौत के आंकड़ों को देखते हुए समय आ गया है इसे लेकर सचेत हो जाने का। इसमें सिर्फ खानपान ही नहीं बल्कि अपनी भावनाओं का भी ख्याल रखने की ज़रूरत है। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान एवं योग के प्रयोगों के द्वारा मन और तन दोनों को ठीक रखने की प्रेरणा दी। प्रेक्षा वाहिनी सदस्यों ने प्रेक्षा गीत से मंगलाचरण किया। प्रेक्षावाहिनी संवाहक मधु चोरड़िया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यशाला में काफी अच्छी संख्या में साधक-साधिकाएं उपस्थित रहे।

आचार्य भिक्षु जन्म दिवस, बोधि दिवस एवं चातुर्मासिक चतुर्दशी कार्यक्रम

शाहदरा

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में विवेक विहार ओसवाल भवन में आचार्य भिक्षु जन्म दिवस, बोधि दिवस एवं चातुर्मासिक चतुर्दशी का प्रेरणादायी एवं श्रद्धा अभिवर्जित करने वाला कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए कहा- 'कंटालिया की पुण्य धरा पर त्रयोदशी के दिन माँ दीपा की रत्न कुक्षी से सिंह स्वप्न के सिंह पुरुष आचार्य भिक्षु का जन्म हुआ। आचार्य भिक्षु का जन्म सत्य, अहिंसा, आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा, आगम निष्ठा का जन्म था। आचार्य भिक्षु का जन्म सम्यक चिंतन, उपशम भाव एवं समता की साधना का जन्म था। आचार्य भिक्षु का जन्म श्रद्धा, समर्पण एवं सेवा भावना का जन्म था। आचार्य भिक्षु का जन्म बोधि का जन्म था। राजनगर में उनको बोधि प्राप्त हुई और उसी बोधि की निष्पत्ति है- हमारा तेरापंथ। तेरापंथ के प्रणेता आचार्य भिक्षु को श्रद्धा नमन।'

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा- आचार्य भिक्षु अनुकरणीय कथा है उस पुरुषोत्तम की जिसकी कथनी-करनी में द्वैत नहीं था। वे जैसा बोलते थे, वही करते थे। साध्वी कार्णिकश्रीजी एवं साध्वी समत्वयशजी ने बोधि दिवस पर शानदार गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन किया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने चातुर्मासिक चतुर्दशी पर हाजरी का वाचन एवं चातुर्मास की महत्ता को व्याख्यात करते हुए कहा- 'चातुर्मास का समय आत्मा रूपी दीपक को प्रज्वलित करने का समय है। तप, जप, ज्ञान, ध्यान की गंगोत्री अवगाहन करने का समय है। पूज्यप्रवर ने महती कृपा कर पावस बगसाया है, पूरा लाभ उठाएं। तेरापंथ की मर्यादा व अनुशासन को प्राणाधिक मानकर अपने व्यक्तित्व को संवारे।'

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा- चातुर्मास का समय सोकर खोने का नहीं, जागने का समय है। साध्वी समत्वयशजी ने चातुर्मासिक प्रेरणा गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंगल संगान कर वातावरण को मंगलमय बनाया। सभा मंत्री सुरेश सेठिया ने उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज को श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया।

पृष्ठ 9 को शेष

आगम वाणी सुनने से...

पुत्र कितना ही बड़ा हो जाये, कितना ही बड़ा पद प्राप्त कर ले, मां के लिए तो वह पुत्र ही रहता है। दूसरी बात जानने की है कि भगवान ने बहुत लोगों के साथ अपने पहले माता-पिता का भी कल्याण कर दिया। यों पुत्र के हाथों माता-पिता मोक्ष को प्राप्त हो गये। यह व्यावहारिक जगत में महत्वपूर्ण बात है।

जप-तप से आत्मा का कल्याण हो सकता है। गुरुदेव तुलसी ने भी अपनी मां को दीक्षा प्रदान की थी। हम भी जो संसारपक्षी हैं, उनका कल्याण हो ऐसा प्रयास कर सकते हैं। परमपावन पूज्य कालूगणी के जीवन चरित्र कालूयशोविलास की सुन्दर व्याख्या कराते हुए पूज्यवर ने उनके मेवाड़ प्रस्थान के प्रसंग को समझाया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशजी ने फरमाया कि बाह्य शल्य की तरह आभ्यंतर शल्य भी मन को व्यथित करते हैं। शल्य के तीन प्रकार बताये गये हैं- माया, मिथ्यादर्शन और निदान शल्य। माया विष से भरे कुंभ के समान है। व्यवहार जगत हो या धार्मिक जगत, हमें माया नहीं करनी चाहिये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।



तप अभिनंदन के विविध आयोजन

औरंगाबाद

लविश धोका का 9५ की तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक अंकुर लुणिया और विवेक बागरेचा ने विविध मंत्रोच्चार के साथ तप संपूर्ति अनुष्ठान सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न किया। उन्होंने तपस्वी को 9 वर्षीय त्याग का प्रत्याख्यान करवाकर आध्यात्मिक भेंट ग्रहण की। तेरापंथ युवक परिषद् के मंत्री मयुर आच्छा एवं सहमंत्री हर्षल धोका की उपस्थिति रही।

तिरुपुर

डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, तिरुपुर में सरिता श्यामसुखा के मासखमण तप का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया। तेरापंथ सभाध्यक्ष अनिल आंचलिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने फरमाया कि आटे का धोवन पीने वाला दूध को नहीं समझता, चीड़ का आभूषण पहनने वाला मोती का महत्व नहीं जानता, वैसे ही जो प्रतिदिन खाने वाला है, वह तप का महत्व नहीं समझ सकता। इस दुर्लभ, दुष्कर तप का स्वाद वही ले सकता है, जिसने अपनी जिह्वा पर नियंत्रण किया है। इस प्रतियोगिता के युग में तपस्या का अनुसरण विरला ही कर सकता है। तपस्या आत्मोत्थान का महत्वपूर्ण साधन है। सरिता श्यामसुखा ने मासखमण की तपस्या कर एक नया इतिहास अपने परिवार में रचा है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा- 'स्नान से देह की शुद्धि, दान से धन की शुद्धि, ध्यान से मन की शुद्धि और तप से आत्मा की शुद्धि होती है।' साध्वी दक्षप्रभा ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

तप अनुमोदना में तेयुप अध्यक्ष सोनू डागा, महासभा कार्यकारिणी सदस्य प्रकाश दुगड़, शांतिलाल झाबक, दिलीप श्यामसुखा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष नीता सिंघवी एवं ऋषभ आंचलिया ने

विचारों, गीतों के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। विनोद बांठिया ने साध्वी प्रमुखाश्रीजी एवं विमल श्यामसुखा ने साध्वी निर्मलयशाजी के संदेश का वाचन किया। पारिवारिकजनों ने गीत के द्वारा तपस्विनी बहन को बधाई प्रेषित की।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभाजी ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री मनोज भंसाली ने किया।

गंगाशहर

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका शासनश्री साध्वी शशिशिखाजी एवं साध्वी ललितकलाजी के मंगल सान्निध्य में शांति निकेतन सेवा केंद्र के प्रांगण में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा शांतिलाल छाजेड़ की धर्मपत्नी संतोष देवी छाजेड़ के मासखमण (३१ दिन) की तपस्या का अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ।

शासनश्री साध्वी शशिशिखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तप का बहुत बड़ा महत्व है। तप की शक्ति के सामने देवता भी नतमस्तक हो जाते हैं। तपस्या में बहुत बड़ी शक्ति निहित है। तपस्या एक औषधि है, जो ना तो धरती पर उपजती है ना ही आकाश से प्रकट होती है, यह तो आत्मबल से ही उपजती है। तप का महत्व तपस्या करने वाला व्यक्ति ही जान सकता है। उन्होंने उपवास के द्वारा कई बीमारियों के निदान होने की बात कही। तप की अनुमोदना तप के द्वारा करने की प्रेरणा दी। साध्वी ललितकलाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संतोष देवी छाजेड़ ने मासखमण कर तप का कलश चढ़ाया है। व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता होती है- भोजन व पानी। जिस व्यक्ति के पास अनासक्ति की चेतना व कर्म निर्जरा की भावना होती है, वही तपस्या कर सकता है। उन्होंने तपस्विनी के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना की। सुरभि बोथरा ने 9५ और दीक्षा सामसुखा ने ६ की तपस्या के प्रत्याख्यान किए।

समारोह का शुभारंभ मंगलाचरण गीत से हुआ। तपस्विनी के पारिवारिकजनों ने गीतिका प्रस्तुत की। अनुमोदना के क्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, मंत्री रतनलाल

छल्लाणी, लूणकरण छाजेड़, मनोहरलाल नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी, मीनाक्षी आंचलिया, अरुण कुमार नाहटा, भरत गोलछा, तेयुप सहमंत्री मांगीलाल बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन रूचि छाजेड़ ने किया।

कोटा

शासनश्री साध्वी धनश्रीजी के सान्निध्य में पिंकी बागरेचा के मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम साध्वीवृंद के मंगल संगान से प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर शासनश्रीजी ने फरमाया कि तप यात्रा का पहला पड़ाव है- देह महत्व का त्याग, दूसरा पड़ाव है- आसक्ति का त्याग, तीसरा पड़ाव- आकांक्षा का त्याग। इनका संयम करने से कर्म रूपी बादल काफूर हो जाते हैं, आत्मा कुंदन हो जाती है। तपस्या चारों गतियों में होती है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना तपस्या है। पिंकी बागरेचा ने मासखमण तप करके हिम्मत का काम किया है।

साध्वी सलिलयशाजी एवं साध्वी विदितप्रभाजी ने विचार व्यक्त किये। तेरापंथी सभा अध्यक्ष संजय बोथरा ने तप की शुभकामना के साथ अभिनंदन पत्र भेंट किया। तेममं अध्यक्ष मंजू सुराणा, विद्या बागरेचा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में रतनलाल जैन, नथमल नाहटा, मदन बागरेचा, अशोक, सुरेश, हितेश बागरेचा, तेयुप मंत्री कमलेश जैन आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शीलयशाजी ने किया।

बोरावड़

तेरापंथ सभा भवन बोरावड़ में साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में पचरंगी तप अनुष्ठान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस तप अनुष्ठान में ३६ तपस्वी संभागी बनें। तपस्वियों के अभिनंदन स्वरूप आयोजित हुये कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के सम्पुचारण से हुआ।

तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने तपस्वी के तप अनुमोदना में गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी रूचिप्रभाजी, साध्वी गौतमप्रभाजी व साध्वी मध्यस्थप्रभाजी द्वारा गीत के माध्यम से तप करने की प्रेरणा दी गयी।

साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने तप की महिमा बताते हुए कहा कि तप से अनंत कर्मों की निर्जरा होती है और जो चिकने कर्म बंधे हुए होते हैं, वह भी मंद होते हैं। आज पचरंगी तप में अनेक श्रावक श्राविकाओं ने उपवास से लेकर पंचोले की तपस्या कर आत्मशोधन की राह को प्रशस्त किया है। तपस्वी तप में आगे बढ़ते रहें, यही मंगलकामना है।

भाई-बहिनों ने साध्वीश्रीजी से पचरंगी तप का सामूहिक प्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा मंत्री रायचंद बोथरा, अशोक लूणिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष हर्षा चोरड़िया व मंत्री सुमन लूणिया ने किया।

शाहदरा,दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ओसवाल भवन में सोनू-विनोद बैद का मासखमण तपोभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा- 'पल-पल को आत्मानंद उपलब्ध कराने वाली बसंती बहार है- तपस्या। जिन शासन का श्रृंगार है- तपस्या। तेरापंथ का आधार है-तपस्या। सत्यं, शिवं, सुन्दरं का द्वार है- तपस्या। जीवन गुलशन की बहार है-तपस्या। कर्म-निर्जरा का सशक्त सोपान है- तपस्या। जैन धर्म का प्राण तत्त्व है- तपस्या। चातुर्मास का समय तप ज्योति के द्वारा आत्मज्योति को प्रज्वलित करने का समय है। शाहदरा में गुरुदेव की कृपा से बारिश की झड़ी के साथ तपस्या की महाझड़ी लगी हुई है। तपस्या के इसी क्रम में आज इस भवन में मासखमण तप उत्सव समायोजित हो रहा है।'

साध्वीश्रीजी ने कहा कि मासखमण तप साधिका सोनू-विनोद बैद ने मासखमण कर बैद परिकर में नव इतिहास का सृजन किया है। गुरुवर की ऊर्जा से, हमारी प्रेरणा से, स्वयं के आत्मबल, मनोबल एवं संकल्प बल तथा परिवार के सहयोग से आज इसने अपने

लक्ष्य को पूर्ण किया है। तपस्विनी बहन तप के पथ पर निरन्तर बढ़ती रहे।

साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने कहा- 'आत्मानंदी व सहजानंदी बनाने वाली धरोहर का नाम है- तपस्या। तप रूपी आत्म संपदा से संपन्न बनने वाली बहन सोनू के मासखमण का हार्दिक अनुमोदन है।' साध्वीवृंद ने सत्रह पद्यों के गीत का संगान कर पूरी परिषद् को हर्षविभोर कर दिया।

तेरापंथी सभा दिल्ली अध्यक्ष सुखराज सेठिया, तेरापंथी सभा शाहदरा अध्यक्ष पन्नालाल बैद, तेममं दिल्ली मंत्री यशा बोथरा, तेयुप दिल्ली उपाध्यक्ष राकेश बैंगानी, महासभा कार्यसमिति सदस्य मन्नालाल बैद, ओसवाल समाज अध्यक्ष आनन्द बुच्चा, विनोद बैद, सुभाष संचेती, महक बैद एवं अभातेयुप पूर्व सहमंत्री सुरेन्द्र सेठिया ने तपस्विनी के तप की अनुमोदना की।

तपस्विनी बहिन के पारिवारिक सदस्य सुमति बैद ने श्रद्धेया साध्वी प्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन कर तपस्विनी बहन को उपहृत किया।

बैंगलोर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् बैंगलोर सेवा, संस्कार एवं संगठन के आयामों के साथ निरंतर गतिमान है। जैन संस्कारों को घर-घर पहुंचाने के उद्देश्य के साथ तेयुप बैंगलोर जैन संस्कार विधि के अलग-अलग कार्य संपादित कर रही है। आज भीखमचंद भंडारी के मासखमण का तप संपूर्ति अनुष्ठान संस्कार उनके निवास स्थान पर किया गया। जैन संस्कार विधि से निर्दिष्ट मंत्रोच्चार से संस्कारक अमित भंडारी ने अनुष्ठान की प्रक्रिया पूर्ण की। तेयुप मंत्री रोहित कोठारी ने मंगल कामनाएं देते हुए उपस्थित परिजनों को जैन संस्कार विधि अपनाने की प्रेरणा दी। अमित भंडारी ने परिषद् के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर परिषद् के उपाध्यक्ष विवेक मरोठी, सदस्य पंकज भंडारी एवं पारिवारिकजन उपस्थित थे। मंगल पाठ से कार्यक्रम संपन्न किया गया।



परिवार : शिक्षण कार्यशाला 'जन्मदाता' का आयोजन

शाहदरा

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में ओसवाल भवन के सुरम्य हॉल में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला जन्मदाता का आयोजन विशाल उपस्थिति में किया गया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने मां ही मंदिर-मां ही पूजा, पिता से बढ़कर कौन है दूजा इस विषय पर सभा को संबोधित करते हुए कहा- 'मां शब्दकोश का छोटा-सा शब्द है किन्तु इसमें पूरी सृष्टि समाई हुई है। मां ब्रह्मा, विष्णु, महेश स्वरूपा है। मां बच्चे को जन्म देती है, इसलिए वह ब्रह्मा है। मां अपनी संतान का भरण-पोषण करती है, इसलिए विष्णुरूपा है। मां अपने बच्चे के कुसंस्कारों का संहार करती है, इसलिए शंकर है। मां ममता का महासागर है। करुणा का निर्झर है। मां ने अपने ममता के आंचल में अपने बच्चे को पाल पोषकर बड़ा किया और उसे विकास के शिखर तक पहुंचा दिया किन्तु वही बेटा आज मां को अनदेखा कर रहा है। कल तक मां की आंखों में आंसू इसलिए थे कि मेरा बेटा खाना नहीं खाता है, आज आंसू इसलिए है कि बेटा खाना खिलाता नहीं है। लानत है ऐसे बेटों को जो बीबी आने के बाद मां के उपकारों को भूल जाते हैं। याद रखिए पत्नी पसंद से मिल सकती है किन्तु मां पुण्याई से मिलती है। अपनी पुण्याई को कभी कम ना होने दे, मां की सेवा कर उसे अभिवर्धित करें। हमारे धर्मग्रंथों में मां बाप के ऋण से उन्मत्त होने की बात कही गई है, हम उनको धर्मध्यान करवाकर ऋण से उन्मत्त होने का प्रयास करें।'

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने पिता की महिमा को व्याख्यायित करते हुए कहा- 'पिता परिवार रूपी रथ का कुशल सारथी होता है, जो इस रथ पर बैठे हर व्यक्ति को आनंद की सैर कराते हैं। पिता परिवार रूपी बगिया का कुशल बागवान होता है, जो इस उपवन की हर कली को सिंचन देता है और उसे पल्लवित व पुष्पित करता है। पिता वह शख्स होता है, जो अपने बच्चों के सपनों की धरती में रंग भरने के लिए अपने सपनों की धरती को बंजर बना देता है। पिता ही वह शख्स होता है, जो अपने पास कुछ व्यवस्था कम होने पर भी अपने बच्चों की हर ख्वाहिश को पूरा करने की कोशिश करता है। पिता के महत्व को समझे एवं मान-सम्मान के भाव को बढ़ाएं।'

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि मां-बाप नीम के पेड़ की तरह होते हैं, पेड़ के पत्ते भले ही कड़वे हों, किन्तु छाया हमेशा ठंडी ही देते हैं। साध्वी समत्वयशाजी ने मां-बाप पर सुमधुर एवं भावपूर्ण गीत का संगान किया।

मुनिश्री हेमराजजी की स्मृति सभा के आयोजन

छापर

मुनि हेमराजजी के स्वर्गारोहण के दूसरे दिन भिक्षु साधना केन्द्र के सभागार में शासनश्री मुनि विजयकुमारजी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए कहा- 'व्यक्ति कर्मों के हल्केपन से साधु जीवन स्वीकार करता है। जितना उसका आयुष्य होता है, उतने समय तक संयम की साधना करता है, फिर आगे की यात्रा पर निकल पड़ता है। मुनि हेमराजजी तेरापंथ धर्मसंघ में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर कमलों से दीक्षित हुए। लगभग 90 वर्षों का उन्होंने संयम जीवन जीया। वे अपने आयुष्य को पूरा करके अग्रिम पड़ाव की ओर अग्रसर हो गये। आचार्य महाश्रमणजी के शब्दों में मुनि हेमराजजी ने वृद्धावस्था में दीक्षा लेकर एक अच्छे संत की छवि बनाई। समूह का जीवन जीकर ऐसी छवि बनाना भी एक बहुत बड़ी बात है, जिसमें मिलनसारिता, सहनशीलता, मधुरता, नम्रता आदि गुण होते हैं, वास्तव में वही व्यक्ति अपनी छवि को उजली बना सकता है। धर्मसंघ में स्थान तो गुरुकृपा और स्वयं के क्षयोपशम से मिल जाता है पर लोगों के दिलों में स्थान बनाना एक विशेष बात है। 11 वर्षों की उम्र में भी वे सबको प्रिय लगते थे। गुरु महाश्रमणजी का उनको परम आशीर्वाद प्राप्त था। कई ऐसे प्रसंग भी आये जब उन्होंने गुरुवर के श्रीमुख से मंगलपाठ सुनकर अपनी बीमारी दूर कर ली। छापर में 5 मास से कुछ अधिक समय उनकी सेवा में रहने का सुयोग हमें मिला। उनको निकट से जानने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ। वे अपनी स्थूल देह को छोड़कर यहाँ से विदा हो गये किन्तु उनके गुणों की गन्ध कभी मिटने वाली नहीं है।' शासनश्री ने मुनि हेमराजजी की विशेषताओं पर एक गीत भी प्रस्तुत किया। अन्त में सभी को चार लोगस का ध्यान करवाया। मुनिश्री के उद्बोधन से पूर्व मुनि दिनकरजी, मुनि आत्मानंदजी, मुनि रमणीयकुमारजी ने भी दिवंगत मुनि हेमराजजी के प्रति अपनी मंगल भावनाएं प्रस्तुत की।

मुनि हेमराजजी 90 अगस्त को दिन के 99:06 बजे के लगभग छापर सेवा केंद्र में दिवंगत हुए। कई दिनों से वे रुग्ण चल रहे थे। उनकी शोभायात्रा में छापर के श्रावकों के अलावा श्रीडूंगरगढ़, बीदासर, सुजानगढ़, चाड़वास के काफी लोग उपस्थित थे। स्मृति सभा का प्रारम्भ तेरापंथ महिला मण्डल की बहिनों के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथी सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराना ने मुनि हेमराजजी का परिचय प्रस्तुत किया। चमन दुधेड़िया, सरोज भंसाली, विनोद नाहटा, श्रीडूंगरगढ़ से समागत मुनिश्री के संसारपक्षीय पुत्र विनोद गंग, भंवर गंग, पुत्रवधु जयश्री गंग, हेमलता दुधेड़िया, विमल वैद, सूरजमल नाहटा ने गीत व भाषण के द्वारा दिवंगत मुनि हेमराजजी के प्रति अपनी भावनाएं प्रस्तुत की।

कृष्णानगर, दिल्ली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल-कुमारजी स्वामी ने स्मृति सभा में अपने हार्दिक उद्गार व्यक्त करते हुए फरमाया कि महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने बीदासर में एक साथ 87 दीक्षा देकर धर्मसंघ में एक दीक्षा का कीर्तिमान बनाया था। उनमें एक दीक्षार्थी मुनि हेमराजजी थे। उन्होंने वृद्धावस्था में दीक्षा लेकर गुरुदेव की असीम कृपा प्राप्त की, सुदुर प्रांतों की यात्रा में साथ रहे। गुरुदेव ने आपकी समयानुकूल व्यवस्था करके खूब चित्त समाधि प्रदान की।

गृहस्थावास में अच्छे श्रावक थे तो साधुत्व को स्वीकार कर अच्छा संयम पालकर अपना काम सिद्ध किया। उन्हें अंतिम समय में शासनश्री मुनि विजय-कुमारजी का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ। छापर सेवा केन्द्र में अनेक संतों ने साधनाकर अपने जीवन को सफल बनाया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर विकस करती हुई चरम लक्ष्य को प्राप्त करे, ऐसी मंगलकामना करते हुए चार लोगसस का सामूहिक ध्यान करवाया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला व तप अभिनंदन

आमेठ

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी कीर्तिलताजी के पावन सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला व तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम दो सत्र में किया गया। पहला सत्र प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का रहा, जिसमें मुंबई से समागत प्रशिक्षक पारस दूगड़ ने ध्यान के प्रयोग करवाए। ध्यान के साथ-साथ कैसे स्वस्थ हों, कैसे शांति से जीवन जी सकें, तपस्या कैसे की जाए, हाईब्लड प्रेशर व लो ब्लड प्रेशर को कैसे कंट्रोल कर सकें, कैसे नींद को व्यवस्थित कर सकें इत्यादि विषयों पर प्रेक्टिकल रूप से बताते हुए रंग चिकित्सा, मुद्रा का प्रयोग, अनुप्रेक्षा व ध्यान के प्रयोग बताए। सभा में उपस्थित सभी भाई-बहनों ने विभिन्न प्रयोग भी किए। साध्वीजी ने प्रेक्षाध्यान के उपरोक्त सभी प्रयोगों को समय निकालकर करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि नियमित प्रयोग करने से शरीर स्वस्थ और निरोगी रहेगा। तेरापंथी सभा द्वारा पारसमल दूगड़ को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता ने किया। दूसरे सत्र में साध्वीश्रीजी के सान्निध्य में तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

पर्वत पाटिया

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, पर्वत पाटिया द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन साध्वी हिमश्रीजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वी हिमश्रीजी ने प्रेक्षाध्यान का परिचय देते हुए श्वास प्रेक्षा के आध्यात्मिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सरल शब्दों में समझाया एवं श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। साध्वी मुक्तियशाजी ने प्रेक्षा चर्या के सूत्रों का विवेचन किया एवं इन्हें जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। लेवल-2 प्रशिक्षक डॉ. माया बेन दारुवाला ने योगासन, प्राणायाम के प्रयोग करवाये तथा कायोत्सर्ग के आध्यात्मिक-वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सैद्धान्तिक प्रशिक्षण दिया। लेवल-2 प्रशिक्षक संध्या रायसोनी ने सम्पूर्ण कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया। वेस्ट-2 जोन ट्रेनर्स कोऑर्डिनेटर मनोज सुराणा ने मंच संचालन किया, प्रेक्षा फाउंडेशन के विभिन्न उपक्रमों की जानकारी दी तथा साधकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

तेरापंथी सभा मंत्री प्रदीप गंग ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं आभार ज्ञापन सुरेश वेदमुथा द्वारा किया गया। महावीर छाजेड़, अनिल चौधरी तथा तेरापंथ युवक परिषद् की टीम ने सक्रियता से व्यवस्था सम्बन्धी दायित्वों का निर्वहन किया।

मुनिश्री हेमराजजी की स्मृति में

:: शासनश्री मुनि विजयकुमारजी ::

मुनि हेमराजजी जीवन उजवाल्हो तेरापंथ में,
छापर धरती पर अपणो इतिहास बणायो अंत में।।

अठहत्तर वर्षा री उमर में संयम स्वीकार्यो,
करुणा दृष्टि हुई गुरुवर री अपणो जन्म सुधार्यो।।9।। मुनि...

वर्षा इठयासी में जीवन री यात्रा करग्या पूरी,
मुनिवर हा सोभागी कोई चाह न रही अधूरी।।2।। मुनि...

बड़ी उम्र में दीक्षा लेकर गण में ख्यात बणाई,
जठे जकां रे साथ रह्या, बै चोखी शोभा पाई।।3।। मुनि...

पांच वर्ष तक गुरुवर री यात्रा में रहग्या सागै,
सद्गुरु री सेवा में प्रमुदित रहता हरदम आगै।।8।। मुनि...

सुणकर मंगलपाठ सुगुरु स्यूं पाता हा सुखसाता,
ही अटूट श्रद्धा सद्गुरु पर मान्या भाग्य विधाता।।5।।

मुनिवर री सेवा रो ओ अंतिम अवसर म्है पायो,
'विजय' हेम मुनि रो जीवन सगलां नै घणो सुहायो।।6।।

(लय : म्हारी रस सेलडियां...)



किशोर युवा उत्कर्ष शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य एवं तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में किशोर युवा उत्कर्ष शिविर का समायोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जगमोहन (आई.पी.एस) डीजीपी एंड सिविल डिफेंस थे। इस अवसर पर युवाओं एवं किशोरों को प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति उत्कर्ष चाहता है। जो जैसा है, वैसा रहना नहीं चाहता है। उत्कर्ष के लिए सहनशीलता विनम्रता, जागरूकता, स्वस्थता, श्रमशीलता, नशामुक्ति आदि तत्व उपयोगी होते हैं। जीवन का सबसे बड़ा धन सहिष्णुता है। सहिष्णु व्यक्ति सफल व विकास को प्राप्त होता है। सहनशीलता से तात्पर्य है हर स्थिति में अपने आपको संतुलित रखना। कितने भी कष्ट व संघर्ष आ जाए उससे घबराना नहीं चाहिए। सहिष्णुता के साथ विनम्रता जरूरी है। विनम्र व्यक्ति विधा को प्राप्त होता है, आदर व सम्मान को प्राप्त होता है। अहंकार ज्वलंत समस्या है, अहंकार पतन की निशानी है और व्यक्ति पग-पग पर अवसाद को प्राप्त होता है। व्यक्ति विलासिता का जीवन न जीए, सात्विक जीवन जीए। प्रदर्शन व आडम्बर से दूर रहे, नशामुक्त जीवन जीए। देव, गुरु धर्म के प्रति आस्था रखें। मुनिश्री ने आगे कहा कि युवा गतिशील व ऊर्जावान होता है। युवा उत्साह का पर्याय होता है।

मुनि परमानंदजी ने कहा कि युवा को हर समय सजग व सक्रिय रहना चाहिए। मुनि कुणालकुमारजी ने गीत का संगान किया। मुख्य अतिथि जगमोहनजी ने कहा कि युवा को शरीर व मन से स्वस्थ रहना चाहिए। स्वस्थ व्यक्ति ही गति-प्रगति कर सकता है। उन्होंने नवकार मंत्र व खमत-खामणा के बारे में भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष राकेश नाहटा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य सुनील दुगड़ ने भी विचार रखे। शिविर में प्रश्न-उत्तर व जिज्ञासा-समाधान का क्रम भी रखा गया। आभार मंत्री संदीप मुणोत व संचालन भरत सिरोहिया ने किया। शिविर में दक्षिण कोलकाता के अतिरिक्त उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, टॉलीगंज, कोलकाता मेन, बेहाला, पूर्वांचल, लिलुआ आदि परिषदों के किशोर व युवकों की सहभागिता रही।

पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान

भीनासर

तेरापंथ भवन, भीनासर में पैंसठिया यंत्र और छन्द अनुष्ठान का आयोजन हुआ। मुनि चैतन्यकुमार अमन के सान्निध्य में होने वाले इस अनुष्ठान में श्रावक समाज को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- 'आस्था के साथ किया गया मंत्र अनुष्ठान तत्काल फलदायी होता है क्योंकि इसमें साधक के पास आत्म शक्ति, मंत्र शक्ति और इष्ट शक्ति तीनों काम करती है। यद्यपि मंत्र जाप निष्काम होना चाहिए सकाम नहीं। इस पैंसठिया अनुष्ठान से ऋद्धि, सिद्धि, लब्धि, निधि और समाधि सभी तरह के लाभ संभावित है। जप योग से सुदृढ़ रक्षा कवच बनने पर दुष्ट शक्तियों से बचाव हो जाता है।'

मुनि अमन ने कहा कि 'यंत्र-तंत्र-मंत्र जप के महाफल को छोटे-छोटे कार्यों तथा भावों के साथ नहीं जोड़ना चाहिए। ऐसा करने से महाफल व अलौकिक फल खो जाता है। मंत्र जप के साथ जैसी भावना होती है वैसी ही सिद्धि होती है। मंत्र जप के साथ एकाग्रता, पवित्रता और प्रसन्नता हो तो उसका परिणाम स्वतः विशिष्टतम हो जाता है। चित्त की निर्मलता से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व भावनात्मक दृष्टि से लाभान्वित होना ऐसे अनुष्ठान के प्रयोग से संभव है बशर्ते उसमें निरन्तरता हो, विधि-विधान पूर्वक हो तो आज भी अनेक चमत्कार घटित हो सकते हैं।'

इस अवसर पर श्रावक संबोध प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गये, जिसमें मोनिका सेठिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर चन्दा बैद व सुनीता डागा संयुक्त रही एवं तृतीय स्थान पर सुशीला गोलछा रही।

जैन संस्कार विधि द्वारा तप अनुष्ठान संपूर्ति

उधना

मोखुंदा राजस्थान निवासी, उधना (सूरत) प्रवासी छीतरमल गन्ना की धर्मपत्नी केसर देवी ने मासखमण (३१ दिन) की तपस्या के तप अनुष्ठान की संपन्नता का कार्यक्रम उनके निवास स्थान तेरापंथ भवन, उधना के समीप साईं रसिडेंसी में समायोजित किया गया। ही संस्कारक अर्जुन मेड़तवाल एवं धी संस्कारक ललित चंडालिया ने जैन संस्कार विधि के अंतर्गत संपूर्ण शास्त्रोक्त विधि से यह कार्यक्रम संपन्न करवाया। नमस्कार महामंत्र के समवेत उच्चारण के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। संस्कारक अर्जुन मेड़तवाल ने मासखमण तपस्या को कर्म निर्जरा का अमोघ साधन बताते हुए केसरदेवी के मासखमण तप की अनुमोदना की। संस्कारक ललित चंडालिया ने जैन स्तोत्रों की महत्ता का प्रतिपादन किया। तेयुप उधना के विकास कोठारी ने तप अनुमोदना की। तेयुप पूर्व अध्यक्ष विनोद भटेवरा ने अपने मंगल भावों की प्रस्तुति दी। परिवारजनों की ओर से छीतरमल गन्ना ने आभार ज्ञापन किया।

सिद्धि तप अभिनंदन कार्यक्रम संपन्न

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य एवं तेरापंथी सभा के तत्वावधान में प्रेम गुलगुलिया के सिद्धि तप का तपोभिनंदन कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- 'हर व्यक्ति शक्ति संपन्न बनना चाहता है। शक्ति संपन्नता के लिए साधना जरूरी है। तपस्या के बिना साधना सफल नहीं हो सकती है। जैसे सूर्य और अग्नि का ताप मलों की शुद्धि करता है वैसे ही जैविक विद्युत का ताप भी मलों की शुद्धि करता है। तप का अर्थ है तपना। जो आठ कर्मों को तपाता है वह तप है। तप भारतीय संस्कृति व जैनदर्शन का मूल प्राण है। जिस प्रकार छोटा-सा चिराग सघन अंधकार का नाश करता है, वैसे ही छोटा सा तप जन्म जन्मांतर के कर्म क्षय कर देता है।' मुनिश्री ने आगे कहा कि कर्म तप बाह्य व आंतरिक दोनों प्रकार के होते हैं। बाह्य तपस्या के साथ आंतरिक तपस्या का भी बहुत महत्व है। स्वाध्याय, ध्यान, विनय, सेवा, समता आंतरिक तपस्या है। जिनशासन में एक से एक बढ़कर तपस्वी संत हुए हैं, जिन्होंने तप के द्वारा आत्म उत्थान के साथ जिनशासन की प्रभावना बढ़ाई है। तप से आत्मा उज्ज्वल होती है। बहिन प्रेम गुलगुलिया ने सिद्धि तप करके अद्भूत साहस का परिचय दिया है। इसमें एक से आठ तक की लड़ी होती है। एक उपवास करना भी कठिन काम होता है। लेकिन इतनी बड़ी तपस्या करके गण की शोभा बढ़ाई है। भाई-बहिनों ने पंचरंगी तप भी किया है। वे सब साधुवाद के पात्र हैं।

इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा कि जीवन की पवित्रता के अनेक आधार माने गए हैं, उनमें एक महत्वपूर्ण आधार तप है। तप से आत्मा का शोधन होता है व कल्मष धुल जाता है। मुनि कुणालकुमारजी ने गीत का संगान किया। तप अभिनंदन में तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद चौरड़िया ने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन एवं दिलीप चौपड़ा ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष पद्मा कोचर, इचलकरंजी से समागत जैन कार्यवाहिनी सदस्य जवाहरलाल भंसाळी, रचना बांठिया, परिवार की महिलाएं आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

ग्रह नक्षत्रों का जीवन पर प्रभाव

टापरा

तेरापंथ भवन, भिक्षु सभागार में 'ग्रह नक्षत्रों का जीवन पर प्रभाव' विषय पर आयोजित विशेष प्रवचन के दौरान मुनि जयकुमारजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जिसके आचार, विचार व आहार शुद्ध है, वही श्रेष्ठ है। यह तीनों तत्व जिसके नियंत्रण में है, ग्रह नक्षत्र उसके नियंत्रण में है। जिनका आचार, विचार और आहार सही है, उसके जीवन पर ग्रह नक्षत्रों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता, और यदि पूर्वत कर्मों के परिणाम स्वरूप कुछ प्रतिकूलता आ भी जाए तो वह उससे पार भी पा लेता है।

मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति पुरुषार्थ से अपना भाग्य बदल सकता है अर्थात् व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। इंसान की संकल्प शक्ति होनी चाहिए। मुनिश्री ने नौ ग्रहों का मानव जीवन से संबंध व उसके प्रभाव का विस्तार से विवेचन किया। मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति अच्छे कर्म करे, पुरुषार्थ करे, व आचार-विचार तथा आचार पवित्र रखे तो ग्रह नक्षत्र व्यक्ति के अनुसार चलेंगे न कि व्यक्ति ग्रह नक्षत्र के अनुसार। जिसकी आवश्यकता कम होगी वह उतना ही सुखी होगा। इस विशेष पाथेय से लोगों को कई महत्वपूर्ण जानकारियां मिली और कई भ्रांतियां दूर हुईं। इस कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने इस विशेष प्रेरणा पाथेय को श्रवण कर ज्ञान व धर्म का लाभ प्राप्त किया।



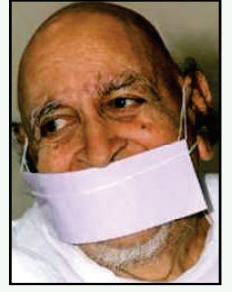
अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छाप-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री विमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000



मनोनुशासनम्

आचार्य तुलसी



(क्रमशः)

आसक्ति द्वैत में पैदा होती है। अद्वैत की भावना पुष्ट होने पर वह विलीन हो जाती है। उपनिषद् का स्वर है—वहाँ क्या मोह और क्या शोक होगा जो एकत्व को देखता है—

तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।

एकत्व की भावना का दृढ़ अभ्यास करने पर शरीर, उपकरण आदि पर होने वाली आसक्ति क्षीण हो जाती है। संयोग हमारी व्यावहारिक सचाई है। हम उसका अतिक्रमण नहीं कर सकते किंतु इस वास्तविकता को भी नहीं भुला सकते कि अंततः आत्मा उन सबसे भिन्न है। इस भेद ज्ञान की अनुभूति को पुष्ट कर साधक देह में रहते हुए भी देह के बंधन से मुक्त हो जाता है।

बल की भावना से साधना की यात्रा में आने वाले कष्टों को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। इन पाँच भावनाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि साधक वही व्यक्ति हो सकता है जो तपस्वी है, पराक्रमी है, ज्ञानी है, जिसे भेदज्ञान का दृढ़ अभ्यास है और जो बलवान् है। ये भावनाएँ कुछ लोगों में—जिनका शारीरिक संहनन सुदृढ़ और मनोबल विकसित होता है—अधिक जागृत होती है।

कुछ लोगों की धारणा है कि ये भावनाएँ पुराने जमाने में ही हो सकती थीं, आज नहीं हो सकतीं। किंतु यह धारणा निराशा को जन्म देती है। आज भी शक्ति के अनुसार ये भावनाएँ हो सकती हैं। यदि हम यह मानकर बैठ जाएँ तो हमारे सामने कुछ करने का अवकाश ही नहीं रहता। यदि हम इनकी संभावना को स्वीकार करते हैं तो अवश्य ही कुछ न कुछ आगे बढ़ते हैं।

परिशिष्ट

(9) प्रेक्षा की पाँच भूमिकाएँ

प्रेक्षा की सामान्य विधि का शिविर काल में उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत भूमिकाएँ विशेष प्रयोग की हैं जो व्यक्ति अनेक शिविर कर लेते हैं उन्हें तथा जो प्रशिक्षक की अर्हता प्राप्त करते हैं उन्हें इन भूमिकाओं का अभ्यास आवश्यक करना चाहिए।

प्रथम भूमिका

(9) प्रेक्षाध्यान : श्वास प्रेक्षा

(क) प्रेक्षाध्यान : दीर्घ श्वास के साथ

कायोत्सर्ग मुद्रा में, सुखासन या पद्मासन में स्थित होकर प्रयत्नपूर्वक श्वास और प्रश्वास को दीर्घ—लंबा करते हुए श्वास की प्रेक्षा का अभ्यास करें।

समय—दस मिनट से एक घंटा तक।

(ख) प्रेक्षाध्यान : समवृत्ति श्वास के साथ

मुद्रा और आसन—ऊपरवत्।

संकल्पपूर्वक श्वास के स्वर को बदलते हुए, प्रत्येक श्वास-प्रश्वास में समान समय लगाएँ और श्वास की प्रेक्षा का अभ्यास करें।

समय—पाँच मिनट से एक घंटा तक।

(ग) प्रेक्षाध्यान : सहज श्वास के साथ

मुद्रा और आसन—ऊपरवत्।

सहज श्वास की प्रेक्षा करें।

समय—पाँच मिनट से एक घंटा तक।

(२) प्रेक्षाध्यान : अनिमेष प्रेक्षा

एक बिंदु पर दृष्टि टिकाकर अभिमेष ध्यान करें। बिंदु दृष्टि की समरेखा में तीन फीट की दूरी पर होना चाहिए। भृकुटि या नासाग्र पर भी किया जा सकता है।

समय—एक मिनट से पाँच मिनट तक।

(३) भावना-योग

(क) अनित्य अनुप्रेक्षा

समय—पाँच मिनट से एक घंटा तक।

(ख) अर्हम् भावना

समय—पाँच मिनट से आधा घंटा तक।

(ग) 'हुं' भावना

समय—पाँच मिनट से आधा घंटा तक।

(४) श्वास-संयम

रेचनपूर्वक बाह्य कुम्भक।

समय—पाँच मिनट तक सुविधापूर्वक जितनी आवृत्तियाँ हो सकें।

(५) संकल्प-योग

प्रातःकालीन जागरण के साथ पाँच मिनट तक भावना का अभ्यास करें। जिन गुणों का विकास चाहें, उन गुणों की तन्मयता का अनुभव करें—उन गुणों से चित्त को भावित करें।

(६) प्रतिक्रमण-योग

रात्रि-शयन से पूर्व पाँच मिनट तक अपनी अतीत की प्रवृत्तियों का सजगतापूर्वक निरीक्षण करें—समय की अपेक्षा से प्रतिलोम निरीक्षण करें।

(७) भाव-क्रिया

अपनी दैनिक प्रवृत्तियों में भाव-क्रिया का अभ्यास करें—वर्तमान क्रिया में तन्मय रहने का अभ्यास करें। जैसे—चलते समय केवल चलने का ही अनुभव हो, खाते समय केवल खाने का, इत्यादि। जो क्रिया करें उसकी स्मृति बनी रहे।

द्वितीय भूमिका

(9) प्रेक्षाध्यान

(क) श्वास-प्रेक्षा—प्रेक्षाध्यान सूक्ष्म श्वास के साथ—कायोत्सर्ग मुद्रा में सुखासन या पद्मासन में स्थित हो सूक्ष्म श्वास-प्रेक्षा का अभ्यास करें।

(ख) प्रकम्पन-प्रेक्षा—सिर से लेकर पैर तक क्रमशः शरीर के प्रत्येक अवयव में सूक्ष्म श्वास के साथ प्रकम्पन पैदा करें और उनकी प्रेक्षा करें।

समय—पाँच मिनट से एक घंटा तक।

(ग) सहज प्रकम्पन-प्रेक्षा—सिर से लेकर पैर तक प्रत्येक अवयव में होने वाले सहज प्रकम्पनों का निरीक्षण करें।

समय—पाँच मिनट से एक घंटा तक।

(२) प्रेक्षाध्यान : अभिमेष प्रेक्षा

समय—तीन मिनट से सात मिनट तक।

(३) भावना-योग

(क) एकत्व-अनुप्रेक्षा

समय—पाँच मिनट से एक घंटा तक।

(ख) अर्हम् भावना

समय—पाँच मिनट से आधा घंटा तक।

(ग) 'हुं' भावना

समय—पाँच मिनट से आधा घंटा तक।

(४) श्वास-संयम

रेचकपूर्वक बाह्य कुम्भक।

समय—पाँच मिनट तक सुविधापूर्वक जितनी आवृत्तियाँ हो सकें।

(५) संकल्प योग

प्रातःकालीन जागरण के साथ पाँच मिनट तक भावना का अभ्यास करें। जिन गुणों का विकास चाहें, उन गुणों की तन्मयता का अनुभव करें—उन गुणों से चित्त को भावित करें।

(६) प्रतिक्रमण-योग

रात्रि-शयन से पूर्व पाँच मिनट तक अपनी अतीत की प्रवृत्तियों का सजगतापूर्वक निरीक्षण करें—समय की अपेक्षा से प्रतिलोम निरीक्षण करें।

(७) भाव-क्रिया

अपनी दैनिक प्रवृत्तियों में भाव-क्रिया का अभ्यास करें—वर्तमान क्रिया में तन्मय रहने का अभ्यास करें। जैसे—चलते समय केवल चलने का ही अनुभव हो, खाते समय केवल खाने का, इत्यादि। जो क्रिया करें, उसकी स्मृति बनी रहे।

(क्रमशः)



संबोधि

आचार्य महाप्रज्ञ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३४) एकत्वभावनादेव, निःसङ्गत्वं प्रजायते।
निःसङ्गो जनमध्येऽपि, स्थितो लेपं न गच्छति॥

एकत्व-भावना से निःसंगता-निलिप्तता उत्पन्न होती है। निःसंग मनुष्य जनता के बीच रहता हुआ भी लिप्त नहीं होता।

एक उत्पद्यते तनुमानेक एव विपद्यते।
एक एव हि कर्म चिनुते, सैकिकः फलमपूनुते॥

‘जीव अकेला ही उत्पन्न होता है और अकेला ही मरता है। जीव अकेला ही कर्मों का संचय करता है और अकेला ही उसका फल भोगता है।’ यह एकत्व भावना का चिंतन है। इसके अभ्यास से व्यक्ति में निःसंगता पैदा होती है और अपने-आप पर निर्भर रहने की वृत्ति पनपती है। प्रत्येक बुद्ध नमि मिथिला के राजा थे। एक बार वे दाहज्वर से पीड़ित हुए। उपचार चला। रानियाँ स्वयं चंदन घिस रही थीं। उनके हाथों में पहने हुए कंगन बज रहे थे। उस आवाज से नमि खिन्न हो गए। कंगन उतार दिए गए। केवल एक-एक कंगन रखा। आवाज बंद हो गई। नमि ने कारण पूछा। मंत्री ने कहा-‘सभी कंगन उतार दिए गए हैं। केवल एक-एक कंगन रखा गया है। एक में आवाज नहीं होती।’-नमि ने सोचा-‘सुख अकेलेपन में है। जहाँ दो हैं वहाँ दुःख है।’ इस एकत्व-भावना से प्रबुद्ध होकर वे प्रव्रजित हो गए।

(३५) न प्रियं कुरुते कस्याप्यप्रियं कुरुते न यः।
सर्वत्र समतामेति, समाधिस्तस्य जायते॥

जो किसी का प्रिय भी नहीं करता और अप्रिय भी नहीं करता, सर्वत्र समता का आचरण करता है, उसे समाधि प्राप्त होती है।

इस श्लोक में आत्मनिष्ठ व्यक्ति के कर्तव्य का निर्देश है। उसमें राग-द्वेष नहीं होता। उसके लिए ‘मेरा’ और ‘पराया’ कुछ नहीं होता। वह प्रवृत्ति करता है, किसी का इष्ट या अनिष्ट करने के लिए नहीं, किंतु अपना कर्तव्य-पालन करने के लिए। उसमें किसी का इष्ट सध सकता है। इष्ट या अनिष्ट प्रवृत्ति का मूल राग-द्वेष है। जो व्यक्ति इनसे प्रेरित होकर प्रवृत्ति करता है, वह सदा पवित्र नहीं रह सकता। जो आत्मनिष्ठ होता है, उसके लिए सब समान हैं। वह सारी प्रवृत्तियाँ आत्म-साक्षात्कार करने के लिए करता है। यही उसकी आत्म-निष्ठा है। यह सामान्य अवस्था नहीं है। यह ऊँची साधना से प्राप्त होती है। अप्रिय करने की बात हरेक की समझ में आ जाती है, किंतु प्रिय न करना-यह कुछ अमानवीय तथ्य-सा लगता है, किंतु भूमिका-भेद से यह भी मान्य होता है। सभी व्यक्तियों के कर्तव्य अपनी-अपनी भूमिका से उत्पन्न हैं। अतः उस ऊँची भूमिका पर पहुँचे मनुष्य के कर्तव्य भी भिन्न हो जाते हैं। यह समता का परम विकास है।

(क्रमशः)

अवबोध

५ मंत्री मुनि सुमेरमल ‘लाडनू’ ५

कर्म बोध

अवस्था व समवाय

प्रश्न ९ : उदय किसे कहते हैं?

उत्तर : अबाधाकाल पूर्ण होने पर जब कर्म शुभ-अशुभ रूप में फल देता है, उसे उदय कहते हैं। उदय के दो प्रकार हैं-(१) विपाकोदय (फलोदय), (२) प्रदेशोदय।

जो कर्म अपना फल देकर नष्ट हो जाता है, वह विपाकोदय है। जो कर्म बिना कोई फल दिए नष्ट हो जाता है, केवल आत्म-प्रदेशों में भोगा जाता है, उसे प्रदेशोदय कहते हैं। कोई भी कर्म बिना विपाकोदय के फल नहीं दे सकता।

प्रश्न १० : कर्म किस रूप में फल देता है?

उत्तर : कर्म की जिस प्रकृति का उदय होता है, उसी प्रकृति के अनुरूप वह फल देता है।

(क्रमशः)

उपासना



(भाग - एक)

आचार्य महाश्रमण

जैन जीवनशैली

तेरापंथ

आचार्य भिक्षु किसी नए संघ को चलाने के उद्देश्य से अलग नहीं हुए थे। इसलिए उन्होंने नामकरण की कल्पना ही नहीं की। पर जोधपुर में अनायास ही उनका संघ तेरापंथी नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह संवाद उनको बिलाड़ा के आसपास ही मिला होगा। इस संवाद ने एक बार उनको चौंका दिया। पर सारी घटना की जानकारी होने पर उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया। वे आसन से नीचे उतरे। अहम् भगवान् को वंदन किया और तेरापंथ शब्द का भाष्य करते हुए बोले-‘हे प्रभो! यह तेरा पथ है। हम तो इस पर चलने वाले पथिक हैं। संख्यापरक नाम को इतना गंभीर अर्थ देना, आचार्य भिक्षु की मौलिक सूझ-बूझ का प्रतीक है।

तेरापंथ शब्द का अर्थ यह भी किया जाता है-पाँच महाव्रत, पाँच समिति तथा तीन गुप्ति, इन तेरह नियमों का पालन करने वाला तेरापंथी कहलाता है।

आचारनिष्ठा, अनुशासन और संगठन तेरापंथ धर्मसंघ के मूलभूत आधार हैं। एक आचार्य का नेतृत्व, मौलिक आचार की एकरूपता और तत्त्व-निरूपण की एक शैली-यह एकत्व का अनुपम उदाहरण है।

तेरापंथ धर्मसंघ के संचालन में वर्तमान आचार्य का कर्तृत्व तो मुख्य निमित्त है ही, आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाओं की भी अहम भूमिका है। कुछ मर्यादाएँ इस प्रकार हैं-

- सब साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
- विहार, चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।
- अपना-अपना शिष्य-शिष्या न बनाएँ।
- आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें। दीक्षित करने पर कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।
- आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुनें, उसे सब साधु-साध्वियाँ सहर्ष स्वीकार करें।

तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादाएँ प्राणवान् हैं, संगठन सुदृढ़ है और व्यवस्थापक मजबूत है। इनके साथ-साथ आचार्य भिक्षु ने धर्म के संबंध में सर्वथा नई अवधारणा दी। उन्होंने कहा-‘धर्म सावैभौम तत्त्व है। वह किसी संप्रदाय की सीमा में बंधा हुआ नहीं लहै। एक अजैन व्यक्ति अहिंसा, ब्रह्मचर्य, संयम आदि की साधना करता है, वह भी धर्म है, मोक्ष-साधना का अंग है।’

- त्याग धर्म है, भोग धर्म नहीं है।
- दया धर्म है, हिंसा धर्म नहीं है।
- आज्ञा धर्म है, आज्ञा से बाहर धर्म नहीं है।
- धर्म अनमोल है। मूल्य से खरीदा जाए वह धर्म नहीं है।
- हृदय-परिवर्तन धर्म है, बल-प्रयोग धर्म नहीं है।

आचार्य भिक्षु ने दुनियादारी और मोक्ष धर्म को सर्वथा अलग-अलग बताया। उनके अनुसार दुनियादारी का कोई भी काम धर्म की सीमा में नहीं आ सकता। इस प्रस्थापना के कारण उनका बहुत विरोध हुआ। विरोध का यह सिलसिला लगभग दो शताब्दियों तक काफ़ी तीव्र रहा। उसके बाद जैसे-जैसे तत्त्वों को समझा गया, विरोध का स्वर क्षीण होता गया। गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ के शाश्वत सिद्धांतों को सामायिक संदर्भों में नई शैली में प्रस्तुति दी। इससे तेरापंथ के सिद्धांत विरोधी लोगों के गले उतरने लगे। यही कारण है कि आज तेरापंथ जैन धर्म की पहचान बन गया है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान तेरापंथ के व्यापक कार्यक्रम हैं। इनके कारण तेरापंथ युगधर्म के रूप में प्रतिष्ठित हो रहा है। तेरापंथ के वर्तमान अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ अपने धर्मसंघ को अध्यात्म की नई ऊँचाइयाँ देने के लिए अहर्निश प्रयत्न कर रहे हैं। आपके नेतृत्व में तेरापंथ का जो स्वरूप उजागर हो रहा है, वह प्रत्येक तेरापंथी के लिए गौरव का विषय है।

(क्रमशः)



बारह व्रत कार्यशाला के विविध आयोजन

रायपुर

समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी, एवं समणी डॉ. मानसप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ अमोलक भवन में किया गया। समणी डॉ. मानसप्रज्ञाजी ने अनेक उदाहरणों को पीपीटी के माध्यम से समझाया। समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी ने सरल रूप में विस्तार से बारह व्रत के बारह नियमों को उपस्थित श्रावक-श्राविका को समझाते हुए अपने जीवन में व्रतों को धारण करने की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने कहा कि बारह व्रत हमारी जीवनचर्या से जुड़े हुए हैं, जिनसे हम सीमाकरण करते हुए अनायास ही होने वाले पापों से कुछ हद तक बच सकते हैं। साध्वीश्रीजी ने बारह व्रती श्रावक बनने का आह्वान करते हुए श्रावक-श्राविकाओं को संकल्प भी स्वीकार करवाये।

सिकन्दराबाद

तेरापंथ भवन सिकन्दराबाद में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा आयोजित बारह व्रत कार्यशाला में विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा- 'हम अनन्तकालीन यात्री हैं। इस त्रैकालिक यात्रा में हमने अनन्त की यात्रा कई बार कर ली है। स्वर्ग के आनंद को हमने चखा है। नरक, तिर्यक गति में भी जाकर आए हैं। अब यह मनुष्य जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव हमें प्राप्त हुआ है। इसे व्रत-संयम के साथ जीएं। जिस यात्रा में प्रकाश, आनंद और शक्ति की अनुभूति होती है, उसका आदि बिंदु है- सम्यक् दर्शन। आत्मदर्शन की दिशा का पहला पड़ाव है- सम्यक् दर्शन। व्रत चेतना की और प्रस्थान करने वाली यात्रा श्रावकत्व की ओर प्रस्थान करती है। श्रावकत्व जब घनीभूत हो जाता है तब सम्यकत्व की ओर गति हो सकती है। व्रतों में आत्मा अत्यन्त लीन होकर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बन जाती है।'

साध्वीश्री ने कहा- 'भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपणा की है। जन्म से जैन अनुयायी बन सकते हैं, श्रावक नहीं, व्रत चेतना से जुड़कर श्रावक बना जा सकता है। व्रत जीवन का सुरक्षा कवच है। अध्यात्म व्रतों की चर्चा अध्यात्म की चर्चा है। बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन संबोध प्रदान करने वाला है। जैन श्रावक के जागने का समय आया है। आचार और विचार की शुद्धि आवश्यक है। करुणा और

संवेदनशीलता से ही व्रत की चेतना पुष्ट होती है। आहार, व्यवहार, विचार और वाणी का संयम हो।'

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी एवं साध्वी राजुलप्रभाजी द्वारा गीत के संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने कहा- 'हर श्रावक-श्राविका तत्त्वज्ञान की गंगा में अभिस्नात होकर आत्मिक आनंद की अनुभूति करे।'

उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक एवं बारह व्रत कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने बारहव्रतों की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा- 'बारह व्रतों की साधना आनन्द की साधना है। संयम की विशिष्ट साधना है। श्रावक समाज इन व्रतों को स्वीकार कर बारहव्रती बनने का प्रयास करे।'

कार्यक्रम का संचालन साध्वी सिद्धियशजी ने किया।

सूरत

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के सान्निध्य में सूरत परिषद् द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन सिटीलाइट में किया गया।

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने बारह व्रतों का महत्व बताते हुए अपने उद्बोधन में फरमाया कि व्रत हमारे लिए ढाल है, सुरक्षा कवच है। जिस तरह भवन की सुरक्षा के लिए रेलिंग बनाई जाती है ठीक उसी तरह हमारे जीवन की सुरक्षा के लिए बारह व्रतों का विशेष महत्व है।

भगवान ने दो प्रकार के धर्म बताए- 'आगार धर्म और अणगार धर्म'। जो साधु नहीं बन सकते, वह बारह व्रती श्रावक बने। व्रत का अर्थ है संयमपूर्वक संकल्प। श्रावक बनने के लिए जरूरी है व्रत चेतना का जागरण, त्याग चेतना का जागरण। त्याग से जीवों को अभयदान मिलता है।

साध्वीश्रीजी ने श्रावक समाज को प्रेरणा देते हुए बारह व्रती बनने का आह्वान किया।

कानपुर

तेरापंथ युवक परिषद्, कानपुर द्वारा साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। मंगलाचरण तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष पूनमचंद सुराणा द्वारा आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित 'श्रावक व्रत धारो' द्वारा किया गया। साध्वी संगीतश्रीजी ने श्रावक समाज को बारह व्रत के विषय में विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि श्रावक अपने जीवन में सब प्रकार की पापकारी प्रवृत्तियों का त्याग नहीं कर सकता फिर भी उनकी

सीमा का निर्धारण कर सकता है। पाप सहित प्रवृत्ति की सीमा का निर्धारण भी आध्यात्मिक विकास का एक द्वार है। एक गृहस्थ पूरी तरह संयमी जीवन नहीं जी सकता पर संयम की सीमा तो कर सकता है एवं व्रतों को स्वीकार कर बारहव्रती बनकर आत्मोत्थान की दिशा में कदम बढ़ा सकता है।

साध्वीश्री ने सभी को बारहव्रती बनने की प्रेरणा दी। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष दिलीप मालू ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं श्रावक समाज को ज्यादा से ज्यादा संकल्प पत्र अथवा ऑनलाइन फॉर्म भरने का अनुरोध किया। इस कार्यशाला में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल के सदस्यों की सम्मिलित सहभागिता रही।

उधना

मुनिश्री उदितकुमारजी के सान्निध्य में तेयुप उधना द्वारा बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ।

मुनि उदितकुमारजी ने गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के द्वारा रचित बारह व्रत गीतिका के संगान के साथ कार्यशाला की शुरुआत की। मुनिश्री ने उपस्थित सभी श्रावक समाज को व्रत का महत्व बताते हुए कहा कि कितने ही व्रत ऐसे हैं, जो हम अनजाने में पालन कर रहे हैं लेकिन हमने स्वीकार नहीं किये हैं। मुनिश्री ने बताया कि व्रत का पालन वही कर सकता है, जिसका संकल्प दृढ़ हो। जो श्रावक बारह व्रत को धारण करता है वही भगवान महावीर का श्रावक कहलाता है। मुनिश्री ने उपस्थित सभी को करण एवं योग के बारे में सविस्तार समझाया। अधिक से अधिक श्रावक समाज इसमें जुड़े ऐसी प्रेरणा दी।

इस कार्यशाला में अभातेयुप टीम के सदस्य, उधना तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

एचबीएसटी (हनुमंतनगर)

तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वाधान में बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, हनुमंतनगर में हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के उच्चारण से हुआ। विजय गीत के संगान तेयुप हनुमंतनगर द्वारा संचालित महाश्रमण सुर संगम द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप से गौतम खाब्या ने किया। तेयुप अध्यक्ष अंकुश बैद एवं महिला मंडल उपाध्यक्ष

संगीता तातेड़ ने सभी का स्वागत कर अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल मंत्री मीनाक्षी देरासरिया ने प्रशिक्षण प्रदाता उपासिका का परिचय दिया।

उपासिका रेखा पोरवाड़ ने बारह व्रतों की संक्षेप में व्याख्या प्रस्तुत की। अणुव्रत, गुणव्रत व शिक्षाव्रत के बारे में श्रावक श्राविका को ज्ञात कराया कि जीवन में सीमाकरण ही व्रतों का अनुकरण है। श्रावक की पहली भूमिका सम्यक्तव दीक्षा है, सम्यक्तव की पुष्टि के बाद दूसरी भूमिका व्रत दीक्षा स्वीकार की जाती है। व्रत ही संयम पूर्ण जीवन जीने का सूत्र है। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत करते हुए सभी को बारह व्रत स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

कार्यशाला में अभातेयुप टीम सदस्य गौतम खाब्या, तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल पदाधिकारी और सदस्यों की उपस्थिति रही। संचालन महिला मंडल उपाध्यक्ष संगीता तातेड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री राजीव हिरावत ने किया।

गुवाहाटी

तेरापंथ युवक परिषद्, गुवाहाटी ने साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ धर्मस्थल में किया। उपाध्यक्ष सुमनेश कोठारी ने बारह व्रत कार्यशाला की जानकारी दी। कार्यशाला का शुभारंभ तेयुप साथियों के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर बारह व्रत कार्यशाला का एक वीडियो दिखाया गया, जिसमें गुरुदेव द्वारा समाज को व्रतों की जानकारी दी गई। तत्पश्चात साध्वी स्वर्णरेखाजी एवं साध्वी स्वस्तिकाश्रीजी ने सभी व्रतों की विस्तृत जानकारी देते हुए समाज को बताया कि श्रावक अपने जीवन में सब प्रकार की पाप क्रिया प्रवृत्ति का त्याग नहीं कर सकता फिर भी उनकी सीमा का निर्धारण कर सकता है। सीमा का निर्धारण करना भी आध्यात्मिक विकास का द्वार है। साध्वीजी ने सभी को व्रत स्वीकार कर बारह व्रती बनने की प्रेरणा दी। तेयुप सदस्यों ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं समाज को ज्यादा से ज्यादा संख्या में बारह व्रत संकल्प पत्र भरने का अनुरोध किया।

मालेगांव

साध्वीश्री पुण्यशशीजी के सान्निध्य में सप्तदिवसीय बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वाधान में किया गया।

साध्वी पुण्यशशीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा- बारह व्रत बारह गहने

हैं। जिस प्रकार हीरा डालने से डब्बी की कीमत बढ़ जाती है उसी प्रकार जीवन रूपी डब्बी में बारह व्रत रूपी गहने डालने से जीवन की कीमत बढ़ जाती है। मोक्ष मंजिल तक पहुंचने के दो मार्ग हैं एक हाइवे पथ है दूसरा नॉर्मल पथ है। हाइवे पथ है अनगार धर्म और नॉर्मल पथ है आगार धर्म। सुखी बनने के लिए साधक सम्यक् पुरुषार्थ करें अर्थात् श्रावक के बारह व्रतों को धारण करें, जो उन्हें मोक्ष मार्ग पर ले जाते हैं। मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष प्रवीण सालेचा ने बारह व्रत के बारे में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी नियतिप्रभाजी ने श्रावक व्रत धारो रे गीत का संगान किया। पीयूष छाजेड़, शांतिलाल तातेड़, कल्पेश कांकरिया, प्रवीण सालेचा ने बारह व्रत के बैनर का अनावरण किया। मंच का संचालन प्राची छाजेड़ ने किया। इस अवसर पर सभा के मंत्री मदनलाल कांकरिया, महेन्द्र निर्मल छाजेड़, कान्तिलाल सालेचा, महिला मंडल से पिकी सालेचा, राजल कांकरिया, विमला कांकरिया, सरोज भंशाली, राधा चोपड़ा, सायर भटेरा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

सुनाम

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, सुनाम द्वारा साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला आयोजित हुई।

साध्वीवृंद ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित 'श्रावक व्रत धारो' गीत का सुमधुर संगान किया। साध्वी कनकरेखाजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा- हम आगार धर्म के साथ श्रावक जीवन की व्रत मीमांसा कर रहे हैं। श्रावक की भूमिका का प्रवेश द्वार है- व्रत। प्रत्याख्यान, व्रत की चेतना को जागृत कर अपने जीवन को सार्थक व सफल बना सकते हैं। छोटे-छोटे त्याग प्रत्याख्यान से व्यक्ति बहुत सारी पापकारी प्रवृत्तियों से बच जाता है। श्रावक-श्राविकाएं बारह व्रतों को समझकर अपने जीवन में अपनाएं। यह क्रम निर्जरा का बहुत बड़ा साधन है। साध्वी सम्बरविभाजी ने बारह व्रत समझाते हुए प्रत्याख्यान करवाए। अच्छी उपस्थिति के साथ कार्यशाला चली। तेयुप अध्यक्ष अरिहंत गोय, सुमित जैन, दिनेश जैन, अंकित जैन, लक्की जैन, विनोद जैन, रुपेश जैन आदि अनेक युवकों सहित तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ महिला मंडल के सदस्यों की सहभागिता रही।



‘दि पॉवर ऑफ रिसाईलेंस’ कार्यशाला के आयोजन



असाड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान में तेरापंथ महिला मंडल, असाड़ा द्वारा शासनश्री गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में ‘द पॉवर ऑफ रि साइलेंस’ का आयोजन किया गया।

कार्यशाला की शुरुआत में साध्वीश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया गया। नव युवती बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। मंत्री रक्षा देवी ने विषय की जानकारी दी। तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व मंत्री कांता देवी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन में अपने लक्ष्य पर पूर्ण रूप से सकारात्मक सोच के साथ, पूरी ईमानदारी से, मेहनत से, आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ें। कामयाबी जरूर मिलेगी। साध्वी मौलिकयशाजी और साध्वी भाविकयशाजी भी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन में कई बार छोटी-बड़ी चुनौती आती है। उन प्रतिकूल परिस्थितियों में डरे नहीं, घबराए नहीं, पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उनका मुकाबला करें, क्योंकि दुनिया में हर प्रोब्लम का सॉल्यूशन जरूर होता है। बस सही नज़रिये से देखने की जरूरत होती है।

शासनश्री साध्वी गुप्तिप्रभाजी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हर व्यक्ति के जीवन में मुश्किलें आती हैं। बिना लड़े डरने वालों को कायर कहते हैं। जो चीज हमें हमारी मेहनत से मिलती है, उसकी खुशी अलग ही होती है। कई बार हम सुनते हैं, अखबार में पढ़ते हैं कि कोई विद्यार्थी परीक्षा में फेल हो गया, किसी व्यापारी को कारोबार में नुकसान हो गया, इसलिए आत्महत्या कर ली। यह मनुष्य जन्म कितनी मुश्किल से मिला है और उसे इस तरह खत्म कर लेने से फिर पीछे परिवार की क्या दशा होती है, माता-पिता के सामने अपने बच्चों को इस तरह से जाते देखना कितना कष्टदायी होता है। अपनी प्रोब्लम को किसी अपने के साथ शेयर करें, चरित्रात्माओं का सान्निध्य प्राप्त करें, अपनी शक्ति को पहचानें। कार्यक्रम में आभार ज्ञापन व संचालन मंत्री रक्षा देवी बालड़ ने किया। कार्यक्रम में बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

गंगाशहर

अभातेमम निर्देशित कार्यशाला ‘दि पॉवर ऑफ रिसाईलेंस’ का आयोजन सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी शशिरेशाजी एवं साध्वी ललितकलाजी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण तथा तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण गीत से हुआ। मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने विषय की जानकारी देते हुए बताया कि रिसाईलेंस का मतलब है विकट परिस्थितियों में उनसे लड़कर प्रस्तुत होना, बॉउन्स बैक करना। उन्होंने पहली भारतीय दिव्यांग पर्वतारोही अरुणिमा सिन्हा की कहानी सुनाते हुए सबको प्रेरणा दी कि हमें भी उनकी तरह मुश्किलों में अपने पूरे जोश और जुनून के साथ फिर से नई शुरुआत करनी चाहिए।

साध्वी ललितकलाजी ने बताया कि सुई की तरह सबको जोड़ते हुए चलो तथा बाल की तरह अपने विचारों को लचीला बनाओ, उससे आपको सफलता अवश्य मिलेगी। साध्वी शशिरेशाजी ने अनाग्रह चेतना को बढ़ाने की तथा हर समय सकारात्मक सोच रखने की प्रेरणा दी। आभार तेमम अध्यक्ष संजू लालानी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपमंत्री बिंदु छाजेड़ द्वारा किया गया।

इरोड़

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल इरोड़ के तत्वावधान में ‘द पॉवर ऑफ रिसाईलेंस वर्कशॉप’ का आयोजन किया गया। वर्कशॉप की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। महिला मंडल के द्वारा मधुर स्वर में प्रेरणा गीत की प्रस्तुति दी गई। तेमम अध्यक्ष एवं मोटिवेशनल स्पीकर पंकी भंसाळी द्वारा बहुत ही सुंदर ढंग से पीपीटी के माध्यम से रिसाईलेंस का अर्थ, उनके घटक, गंभीर परिस्थिति में अपने आप को नियंत्रित करते हुए उस परिस्थिति से उबरने एवं लचीलेपन को कायम रखने के तरीकों के बारे में समझाया गया। विभिन्न गतिविधियों एवं प्रयोगों के माध्यम से जीवन में खुश रहने का महत्व समझाया गया। मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक रूप से लचीलेपन को पुष्ट करने के लिये विशेष बल दिया। कार्यशाला का संचालन प्रज्ञा सुराणा द्वारा किया गया। मंत्री पुनम दुगड़ द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

405 अठाई का ऐतिहासिक सामूहिक तप संपूर्ति अनुष्ठान

अहमदाबाद

मुनि कुलदीपकुमारजी एवं मुनि श्री डॉ. मदनकुमारजी के पावन सान्निध्य एवं मुनि मुकुलकुमारजी तथा शासनश्री साध्वी सरस्वतीजी आदि साध्वीवृन्द के निर्देशन में अहमदाबाद के ४०५ तपस्वी वीरों ने तेरापंथ के इतिहास में प्रथम बार एक साथ अठाई की तपस्या कर एक नव इतिहास का सृजन किया है। तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक, उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नवलखा, संस्कारक नानालाल कोठारी एवं प्रकाश ढींग ने विविध संकल्पों के साथ सम्पूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया। कार्यक्रम में अहमदाबाद के सभा अध्यक्ष कांतिलाल चौरड़िया, तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनलाल सिंघवी, तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना, तेमम की अध्यक्षता हेमलता परमार, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश गुगलिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश घींग, तेरापंथ सेवा समाज अध्यक्ष सज्जनलाल सिंघवी एवं गणमान्य व्यक्तियों व श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में जीतु छाजेड़, दिनेश बागरेचा एवं रवि बालड़ का विशेष श्रम रहा। मुनिश्री के मुखारविंद से मंगल पाठ के साथ तप संपूर्ति अनुष्ठान का समापन हुआ।

नवरंगी तप प्रत्याख्यान समारोह

जलगांव

मुनि आलोककुमारजी आदि के पावन सान्निध्य में नवरंगी तप प्रत्याख्यान समारोह का भव्य आयोजन जलगांव में किया गया, जिसके तहत सामूहिक प्रत्याख्यान का कार्यक्रम महेश प्रगति भवन में आयोजित किया गया। इस नवरंगी तप अनुष्ठान में जलगांव व आसपास के क्षेत्रों से लगभग १५६ भाई बहनो ने तपस्या की। जिसमें ममता आंचलिया ने ४१ की तपस्या, चंदा लोढ़ा ने २५ की तपस्या, रानी गेलडा ने १३ की तपस्या, अदिति मेहता ने ११ की तपस्या तथा नवरंगी तप के अंतर्गत १ से ६ तक की तपस्या के साथ कुल १५६ भाई-बहिनें उपस्थित हुए। भुसावल से विशेष रूप से ६ से लेकर उपवास तक की पूरी तपस्या की एक लड़ी के साथ तपस्वी भाई-बहिनें उपस्थित हुए थे। सभी तपस्वियों का अभिनंदन पत्र से सम्मान किया गया।

मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने सुमधुर स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष जितेंद्र चौरड़िया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद, टीपीएफ अध्यक्ष संजय चौरड़िया, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदड़िया, कन्या मंडल प्रभारी कीर्ति शामसुखा एवं तपस्वियों के परिवार से भी कई परिजनों ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। तेरापंथी सभा की ओर से भिक्षु भजन मंडली ने तपस्वियों के स्वागत में संगीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। तपस्वी संत मुनि लक्ष्यकुमारजी ने अपने मंगल उद्बोधन में तप की महत्ता विषय पर उपस्थित जन समुदाय को सरल भाषा में समझाया। मुनि हिमकुमारजी ने सुमधुर गीत के माध्यम से सभी तपस्वियों के नामों का उल्लेख करते हुए उनके तप की अनुमोदना की।

मुनि आलोककुमारजी ने अपने प्रेरणा पाथेय में फरमाया कि तप मोक्ष का द्वार है, आत्मा का उद्धार करने वाला है। तप, त्याग का जैन धर्म में विशेष महत्व है। तप और तपस्वियों का स्वागत है। मुनिश्री ने तपस्वियों को मनोबल बनाए रखने व साता हो तो ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, जिसका उपस्थित जनसमुदाय पर काफी सकारात्मक असर पड़ा। इस नवरंगी तप प्रत्याख्यान समारोह पर आसपास के क्षेत्रों से व जलगांव से काफी बड़ी संख्या में भाई-बहन उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभा के मंत्री नीरज समदड़िया एवं सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम का संचालन टाकरमल सेठिया ने एवं आभार ज्ञापन राजकुमार सेठिया ने किया।

रिवील विवज कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर

प्राचीन ढालों के आधार पर रिवील विवज रोचक प्रस्तुति ‘शासन गौरव’ साध्वी कनकश्रीजी ‘लाडनू’ के सान्निध्य में अणुविभा केन्द्र जयपुर के महाप्रज्ञ सभागार में हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित रिवील विवज कार्यक्रम को महिला मंडल जयपुर शहर द्वारा अत्यंत कलात्मक ढंग से आयोजित किया गया।

नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत की प्रस्तुति मंडल की संगायिका बहनों द्वारा समवेत स्वरों से हुई। मंडल की पूर्व अध्यक्ष गुलाब बोथरा एवं गरिमा बरड़िया ने कार्यक्रम की थीम को नई विधा में प्रस्तुत किया। अध्यक्षा नीरू मेहता द्वारा स्वागत भाषण हुआ। वीणा भांडिया ने आयोज्य कार्यक्रम का परिचय देते हुए कहा प्रस्तुत विवज प्रतियोगिता प्राचीन पांच गीतिकाओं विघ्न हरण की ढाल, मुण्ड मोरा, भिक्षु म्हारे प्रगट्याजी, आराधना एवं जम्बूस्वामी के आधार पर होगी। उन्होंने विवज की प्रक्रिया एवं नियमों की भी जानकारी दी।

२० प्रतिभागी बहनों की पांच-पांच सदस्यों की चार टीमों के नाम निर्धारित किये गये - १. विघ्न हरण २. जम्बूकुमार ३. मुण्ड मोरा तथा ४. आराधना। चारों टीमों से कई राउंड्स में अनेक प्रश्न पूछे गये। सभी ने तत्परता से प्रायः सही उत्तर दिये। प्रतियोगिता की निर्णायक डॉ. कांता छाजेड़ एवं प्रतिभा बरड़िया ने पूरी सजगता से अपना दायित्व निभाया। उनके निर्णय के आधार पर जम्बू स्वामी टीम प्रथम स्थान पर रही, आराधना टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

मंडल द्वारा दोनों टीमों को सम्मानित किया गया। संभागी सभी बहिनों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् से भी अनेक प्रश्न पूछे गये। जिससे कार्यक्रम की रोचकता और अधिक बढ़ गई।

मंत्री निलिमा बैद ने धन्यवाद एवं आभार ज्ञापन करते हुए कहा कि कार्यक्रम की सफलता में शासन गौरव साध्वीश्रीजी की उत्साहवर्धक प्रेरणा एवं साध्वी मधुलताजी द्वारा दिया गया सघन प्रशिक्षण मजबूत आधार बना है। उन्होंने हम प्रशिक्षु बहनों को पन्द्रह दिनों तक निरंतर पांचों गीतिकाओं की रागें-लय, उच्चारण शुद्धि, अर्थ आदि को समझाने व सिखाने में विशेष परिश्रम किया। साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता तथा सभी सहयोगी बहनों के प्रति मंडल की तरफ से आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में वीणा भांडिया एवं गरिमा बरड़िया का विशेष योगदान रहा।



बारह व्रत कार्यशालाओं के विविध आयोजन



दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, दिल्ली के तत्वावधान में ओसवाल भवन, शाहदरा में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा- 'भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपना की है- आगार धर्म व अणगार धर्म। साधु धर्म व श्रावक धर्म। श्रावक के लिए भगवान ने बारह व्रत का विधान किया है। व्रत संयम की चेतना को पुष्ट करने का सशक्त सोपान है। व्रत अंतरचेतना को उद्घाटित करने का द्वार है। व्रत अव्रतरूपी नाले को रोकने का ढक्कन है। व्रत आत्मानंदी व सहजानंदी बनाने वाली अमोघ संपदा है। भगवान ने कहा है हर श्रावक बारह व्रत रूपी अनमोल संपदा का स्वामी बने। जब तक व्यक्ति व्रतों को स्वीकरण नहीं करता तब तक अव्रत का पाप लगता रहता है। हर श्रावक बारह व्रतों को समझे एवं धारण करें।'

साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने कहा- 'चातुर्मास का यह समय आत्मा को व्रत संयम से पुष्ट करने का समय है। व्रतों की चाबी से आत्मा पर लगे ताले को खोलकर आत्म संपदा से संपन्न बनने का समय है।'

साध्वी समत्वयशाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि बारह व्रत को स्वीकार कर निज आत्माधन को संभालने का प्रयत्न करें।

तेयुप अध्यक्ष विकास चौरडिया ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप साथियों ने मंगल गान प्रस्तुत किया। बारह व्रत कार्यशाला को सफल बनाने के लिए संयोजक राकेश लोढ़ा का विशेष श्रम रहा।

मैसूर

मुनि रश्मिकुमारजी, मुनि प्रियांशु-कुमारजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् मैसूर ने दो दिवसीय बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का तेरापंथ भवन में आयोजन किया।

मुनि रश्मिकुमारजी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि व्रत से त्याग होता है। जहां त्याग है वहां तनाव मुक्त जीवन शैली होती है। अच्छे स्वास्थ्य की चाबी है- व्रत। कर्म निर्जरा का अमोघ उपाय है- व्रत

स्वीकरण। संयम प्रधान जीवन शैली का विकास करता है। आत्म हित के लिए व्रतों को स्वीकार करना बहुत जरूरी है।

मुनि प्रियांशुकुमारजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि केवली भाषित धर्म में जो श्रद्धा रखता है उसे व्रती श्रावक कहा गया है। बारह व्रतों को स्वीकार कर सही मायने में श्रावकत्व ग्रहण करें।

बारह व्रत कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक निर्मल नौलखा ने अपने वक्तव्य में कहा कि व्रत के लिए ज्ञान और आचार जरूरी है। अज्ञान के समान दूसरा कोई कष्ट नहीं। अज्ञान जन्म-जन्मांतर तक दुखी बनाता है। लौकिक ज्ञान से हमें जानकारी होती है लेकिन सम्यक् ज्ञान हमें स्वयं से परिचित करवाता है। सम्यक् ज्ञान से ही मोक्ष मंजिल प्राप्त हो सकती है। ज्ञान के साथ आचार भी जरूरी है। ज्ञान का सार आचार है। जब तक सुनेंगे नहीं, जानेंगे नहीं तब तक ज्ञान नहीं मिल सकता। बिना ज्ञान के व्रत नहीं ले सकते। व्रतों को समझें और ग्रहण करें। बिना व्रत के व्यक्ति अहंकारी जीवन जीता है। व्रत धारण करने वाला ही श्रावक कार्यकर्ता होता है। व्रतों को समझ कर स्वीकार करने से पाप से बच सकते हैं।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष कमलेश गांधी ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक एवं परिषद् के उपाध्यक्ष लक्ष्मी श्रीश्रीमाल ने कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक निर्मल नौलखा का संक्षिप्त परिचय करवाया। संचालन तेयुप मंत्री प्रमोद मुनोत ने किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी भटेवरा सहित अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

कृष्णानगर, दिल्ली

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का सफल आयोजन उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन कृष्णा नगर में संपन्न हुआ।

कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदाता के रूप में उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को बारह व्रतों और अतिचारों को बहुत ही सरल, सारगर्भित और सह उदाहरण द्वारा समझाया तथा सभी को

बारह व्रतों को समझकर धारण करने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

मुनिश्री ने अपने मंगल उद्बोधन में इन बारह व्रतों को धारण कर सुश्रावक बनने, सुरक्षित एवं जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा प्रदान करते हुए श्रावक का स्थान सबसे विशेष बताया।

इस अवसर पर तेयुप दिल्ली अध्यक्ष विकास चौरडिया, सहमंत्री शिवम छलाणी, क्षेत्रीय संयोजक मिलन बोथरा सहित दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, गांधीनगर सभा के अध्यक्ष कमल गांधी एवं कृष्णानगर, गांधीनगर क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए तेयुप गांधीनगर के कार्यकर्ताओं ने विशेष श्रम किया।

ईरोड

बारह व्रत स्वीकरण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, ईरोड द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में उपासक हनुमानमल दूगड़, प्रकाश पारख एवं रमेश पटावरी की उपस्थिति में किया गया।

उपासक हनुमानमल ने विजय गीत से मंगलाचरण करते हुए कार्यशाला का प्रारम्भ किया। तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष महेंद्र भंसाली द्वारा बारह व्रत कार्यशाला के आयामों पर प्रकाश डालते हुए स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। उपासक महोदय ने कहा कि श्रावक वही है, जिसमें सम्यक्त्व है। देव, गुरु और धर्म में अटूट श्रद्धा है। उन्होंने भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों और उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म की व्याख्या करते हुए आगार और अणगार धर्म के बारे में समझाया। उन्होंने श्रावक के व्रतों की व्याख्या करते हुए बताया कि जब तक हम व्रत ग्रहण नहीं करेंगे, तब तक दोषों का छुटकारा नहीं होगा। जैसे बिजली का कनेक्शन कट नहीं होता, तब तक हमें मिनिमम राशि का भुगतान करना पड़ता है, बिना ब्रेक गाड़ी नहीं रुकती तो फिर कर्मों की निर्जरा के लिए भी व्रतों को ग्रहण करना जरूरी है। व्रतों को समझते हुए उन्हें स्वीकार करने की प्रेरणा दी गई। मंत्री ऋषभ नखत द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर

विजयनगर स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीपकुमारजी ठाणा २ के सान्निध्य में 'दम्पति कार्यशाला- पवित्र रिश्ता सात फेरो का' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा हुआ।

जिसके प्रशिक्षक मुकेश जी भंडारी रहे, कुल ३७ दंपतियों ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज की मुनि दीपकुमारजी ने कहा भारतीय संस्कृति में 'दाम्पत्य जीवन आदर्श परम्परा रही है। दम्पति परिवार की सम्पत्ति है, दाम्पत्य जीवन में आज खटास आ रही है, दरार पड़ रही है, टूटन आ रही है, दाम्पत्य जीवन शांति पूर्ण रहे इसके लिए विश्वास, समय, संवाद, धन्यवाद, सहिष्णुता का विकास जरूरी है। एक-दूसरे के प्रति विश्वास बहुत जरूरी होता है। विश्वास रिश्तों की मजबूती के लिए आधार स्तंभ होता है। विश्वास नहीं है तो सात फेरों का संबंध टूटने में सात मिनट की भी देरी नहीं लगती।

रिश्तों में एक-दूसरे के लिए समय समर्पित करना अपेक्षित होता है। संवाद होते रहना बहुत ही जरूरी है। संवाद नहीं हो तो गलत फहमिया उत्पन्न हो जाती है,

संवाद से समस्याओं का समाधान हो सकता है धन्यवाद का भाव बना रहना चाहिए, शिकायत नहीं धन्यवाद। सहनशीलता रिश्ते की अखंडता के लिए सबसे जरूरी है। दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे के प्रति आदर का भाव रखना चाहिए।

प्रशिक्षक मुकेश जी भंडारी ने संवाद, आदर, समय, धैर्य, अपेक्षा और टकराव से बचने की बात कहते हुए अनूठे तरीके से सभी युगलों को एक्टिविटीज करवाई। वीडियो एवं वार्तालाप के माध्यम से दाम्पत्य जीवन में सफलता की बाते बताई। हास्य एवं एक्टिविटी का समवेश भी हुआ। मुकेश जी द्वारा अच्छा प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने स्वागत वक्तव्य दिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया ने शुभकामनाएं दी।

प्रशिक्षक मुकेश भंडारी का परिचय इस कार्यशाला के संयोजक तेयुप सहमंत्री संजय भटेवरा ने दिया। इस कार्यक्रम के प्रायोजक मनोहरलाल बाबेल, ठीकरवास कला-बैंगलोर परिवार रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री पवन बैद ने किया।

हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

'हू एम आई' कार्यशाला का आयोजन

इंदौर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् इंदौर द्वारा 'हू एम आई' कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 9५ वर्ष से ६० वर्ष के प्रतिभागियों ने २७ घंटे वही रहकर सहभागिता दर्ज कराई। कार्यशाला के साथ साथ संभागीगण ने शनिवार की सामयिक की और जैन धर्म के तत्वों को समझा। कार्यशाला और एक्टिविटी के द्वारा जाना कि कैसे अपने कार्य को स्मार्ट कार्य में बदल सकते हैं। पेंटिंग के द्वारा 'गोल टू स्मार्ट गोल' को समझाया गया।

कार्यशाला के समापन के अवसर पर महासभा टीम के सदस्य निलेश रांका, सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा, अभातेयुप से राष्ट्रीय वीतराग पथ प्रभारी त्रीन मेहता, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम सेंट्रल जोन अध्यक्ष संदीप श्यामसुखा, सेंट्रल जोन मंत्री रचना सुराणा, टीपीएफ निवर्तमान अध्यक्ष बिकाश बैद, वर्तमान अध्यक्ष रोहित कोटडिया आदि ने उपस्थित होकर सभी संभागीगण का उत्साहवर्धन किया।

इस कार्यशाला में बैंगलोर से समागत सीपीएस चीफ ट्रेनर अरविंद मांडोत एवं को-ट्रेनर बबीता रायसोनी ने संभागीगण को प्रशिक्षण दिया एवं सभी संभागीगण ने बेहतरीन प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यशाला के संयोजक विवेक राखेचा एवं सहसंयोजक विक्रान्त नाहटा एवं पूरी तेयुप टीम के प्रयासों से यह सफल कार्यक्रम संपन्न हुआ।



कर्मों से ही निर्धारित होती है गति : आचार्यश्री महाश्रमण



01 अगस्त 2023, नन्दनवन

ज्ञान का आलोक प्रदान करने वाले परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रेरणा पाठ्य प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में ज्यादातर प्रश्न गौतम के द्वारा पूछे जा रहे हैं एवं

उत्तर प्रभु महावीर के द्वारा दिये जा रहे हैं। कहीं-कहीं कोई दूसरे व्यक्ति भी प्रश्न पूछते हैं और प्रभु महावीर उत्तर भी देते हैं।

पार्श्व परम्परा का एक साधु गांगेय भगवान महावीर के पास आकर एक प्रश्न

भगवान से करता है कि भंते! जो जीव नरक में पैदा होते हैं, वे अपने आप पैदा होते हैं या और कोई उन्हें पैदा होने के लिये भेजता है। यह प्रश्न पुनर्जन्म की व्यवस्था के संदर्भ में है।

प्रभु महावीर ने उत्तर प्रदान करते

हुए फरमाया कि जीव मरने के बाद आत्मा स्वतः ही उसके द्वारा किये गये कर्मों के आधार पर किसी गति में चली जाती है। ऋजुगति हो तो एक समय लगता है। विमान में बैठाकर कोई नहीं ले जाता है। नरक गति में भी कृत कर्मों के आधार पर जीव स्वतः पैदा होता है। कर्म के उदय एवं कर्म की गुरुता से आत्मा नरक और स्वर्ग की तरफ गति करती है। जिस समय अशुभ कर्म का उदय-विपाक होता है तो उस समय आत्मा नरक गति में स्वतः चली जाती है।

ऐसे ही जीव देवगति में उत्पन्न होता है। उसके कारण अलग है। उस समय उसके कर्म की विशुद्धि, शुभ कर्म का उदय विपाक होता है। ऐसा ही अन्य गतियों में होता है। सारांश यही है कि जीव स्वयं पैदा होता है, कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं है। इसलिए व्यक्ति को अपने कर्मों पर ध्यान देना चाहिये। कर्मों में निर्मलता, सरलता, सुहृदयता है तो गति अच्छी हो

सकती है और छल, कपट, झूठ, हिंसा है तो अधोगति भी हो सकती है।

अनेक प्रश्नों के उत्तर पाकर गांगेय समझ लेता है कि भगवान महावीर सर्वज्ञ हैं। वह भगवान को प्रदक्षिणा देकर वन्दन करता है। चातुर्याम धर्म से भगवान संप्रतिकमणात्मक पंचमहाव्रत धर्म को स्वीकार करता है। तपस्या साधना कर सिद्ध मुक्त बन जाता है। अच्छा प्रश्नकर्ता और अच्छा उत्तरदाता हो तो बात का निचोड़ निकल सकता है, अच्छा बोध मिल सकता है।

पूज्यवर ने अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी की जीवन गाथा कालूय शोविलास का सरस शैली में वाचन करते हुए मालवा प्रदेश की यात्रा के क्रम को आगे बढ़ाया। पूज्यवर ने पीयूष-प्रियंका चपलोट को सजोड़े एवं तन्मय झवेरी को तपस्या के प्रत्याख्यान कराये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

राज्यपाल से तैयुप प्रतिनिधियों की शिष्टाचार भेंट

जोधपुर

राजस्थान के महामहिम राज्यपाल कलराज मिश्र के जोधपुर आगमन पर तेरापंथ युवक परिषद, सरदारपुरा एवं जोधपुर के प्रतिनिधियों ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य व तैयुप सरदारपुरा अध्यक्ष कैलाश जैन ने परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण में संचालित अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के बारे में एवं संगठन द्वारा निर्देशित सेवा, संस्कार व संगठन के प्रमुख आयामों नेत्रदान, रक्तदान, आचार्य तुलसी डायमनोस्टिक सेंटर, तेरापंथ टास्क फोर्स आदि के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। तैयुप सरदारपुरा मंत्री मिलन बांठिया व सहमंत्री धीरज बैंगानी ने मोमेंटो देकर एवं तैयुप जोधपुर के निवर्तमान अध्यक्ष मितेश जैन व वर्तमान अध्यक्ष कमल सुराणा ने जैन दुपट्टा व साहित्य भेंट कर राज्यपाल महोदय का अभिनंदन किया। महामहिम महोदय ने अभातेयुप व तैयुप के सेवा कार्यों की जानकारी प्राप्त कर प्रसन्नता व्यक्त की।

‘कैसे करें राष्ट्र व संघ की सेवा’ कार्यक्रम

गुवाहाटी

साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तथा सभी संघीय संस्थाओं के सहयोग से ‘कैसे करें राष्ट्र व संघ की सेवा’ कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि असम राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया थे। साध्वीश्रीजी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए फरमाया- ‘राष्ट्र एवं संघ की सेवा के लिए नैतिकता, आचार शुद्धि, चारित्र्य शुद्धि के साथ संयम की दृष्टि को अपनाना होगा। संयमी व्यक्तित्व ही आत्मसेवी के साथ देश सेवी बन सकता है। पुरुषार्थ की गाथा रचने वाले पूज्य गुरुदेव अपनी पदयात्रा अणुव्रत यात्रा के दौरान मानव को मानव बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो राष्ट्र एवं संघ की सेवा कर सकते हैं।’

मुख्य अतिथि राज्यपाल कटारिया ने कहा कि संयमित जीवन राष्ट्र व संघ की सेवा में सहायक होता है। आप अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाकर राष्ट्र व संघ की सेवा कर सकते हैं। इसका सिंहनाद आचार्यश्री तुलसी ने लगभग ७५ वर्ष पूर्व अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से किया था। उन्होंने अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों के माध्यम से राष्ट्र व संघ की सेवा करने की पुरजोर घोषणा की थी। अगर व्यक्ति सुधारेगा तो राष्ट्र स्वयं सुधर जाएगा। यह तभी संभव है जब आप अपनी भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाएंगे।

साध्वी सुधांशुप्रभाजी ने अपने विचार वक्तव्य के माध्यम से रखे। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा ने अपने वक्तव्य के माध्यम से राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया एवं राज्य की प्रथम महिला अनिता कटारिया का तेरापंथ धर्मस्थल में भावभरा स्वागत-अभिनंदन किया। सभा की तरफ से विजय चोपड़ा, बसंत कुमार सुराणा, इनकार दुधोडिया, उत्तमचंद नाहटा एवं अमोलकचंद भंसाली, उपाध्यक्ष पवन जम्मड़, संगठन मंत्री छत्तरसिंह भादानी, वरिष्ठ सहमंत्री राजकुमार बैद एवं कोषाध्यक्ष उम्मेद सेठिया ने राज्यपाल महोदय का स्वागत-अभिनंदन किया।

अनिता कटारिया का तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा, मंत्री ममता दुगड़ एवं कोषाध्यक्ष राजश्री दुगड़ ने स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन सभा मंत्री रायचंद पटावरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक निलेश पगारिया ने किया।

दिल्ली स्तरीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

शाहदरा

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में दिल्ली सभा के तत्वावधान में दिल्ली स्तरीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन ओसवाल सामुदायिक भवन में किया गया, जिसमें अच्छी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा- ‘बच्चों को संस्कारित करने वाला एक महान उपक्रम है-ज्ञानशाला। भावी पीढ़ी के भविष्य को समुज्ज्वल करने का सक्षम साधन है-ज्ञानशाला। अध्यात्म के रंग से जीवन को बहुरंगी बनाने का माध्यम है-ज्ञानशाला। दिल्ली महानगर की प्रशिक्षिका बहनों की यह उपस्थिति संकेत कर रही है कि प्रशिक्षिका बहनें अपने दायित्व के प्रति जागरूक हैं। हमारी ये प्रशिक्षिका बहनें अपने समय का सार्थक उपयोग बच्चों के भीतर ज्ञान की तरंगों को तरंगित करने में कर रही हैं। यही वह समय है, जिसमें बच्चों के जीवन को संस्कारों के इन्द्रधनुषी रंग से रंगीन बनाया जा सकता है। प्रशिक्षिका बहनें बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में जागरूक बनें। दिल्ली सभा ज्ञानशाला संचालन के व्यवस्था-पक्ष को समुचित ढंग से संभाल रही है। दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक एवं सह संयोजक तथा पूरी टीम अपने कर्तव्य का सम्यक् निर्वहन कर रही हैं।’

साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा- ‘प्रशिक्षिका बहनें बच्चों के जीवनरूपी वृक्षों की जड़ों को संस्कार रूपी सलिल का सिंचन देकर मजबूत बना रही हैं। इसलिए ये अभिनंदनीय है।’ साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा- ‘गुरुदेव श्री तुलसी का एक महत्वपूर्ण अवदान है-ज्ञानशाला। ज्ञानशाला संस्कारों की शाला है इस शाला में पढ़ाने वाले स्वयं के एवं बच्चों के जीवन को समुज्ज्वल बनाते हैं।’ दिल्ली सभाध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया, ज्ञानशाला संयोजक श्री अशोक बैद ने सामयिक विचारों की प्रस्तुति दी। सूर्यनगर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने सुन्दर कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। पालम ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगल संगान किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला की सहसंयोजिका दीपिका नाहटा ने किया।



वैर भाव को समाप्त कर आत्मा की निर्मलता का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

११ अगस्त २०२३

नन्दनवन मुम्बई

शान्तिदूत-युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में हिंसा की बात बतायी जा रही है। अहिंसा को जानने के लिए हिंसा को जानना अपेक्षित हो सकता है। अहिंसा का भाव जीवन में रखना है तो हिंसा होती क्या है, इसका ज्ञान होना आवश्यक होता है।

एक प्रश्न किया गया कि एक आदमी किसी पुरुष का हनन कर रहा है, वह पुरुष वैर से स्पृष्ट होता है अथवा वो नो-पुरुष वैर से स्पृष्ट होता है। उत्तर दिया गया कि गौतम! पुरुष हनन करने वाले नियम से पुरुष वैर से स्पृष्ट होता है। शत्रुता की परम्परा कई जन्मों तक चल सकती है। बदला लेने की भावना हो सकती है। भगवान पार्श्व का कमठ के साथ कई जन्मों तक वैर का अनुबन्ध चला था।



जैसे वैर की परम्परा चलती है तो स्नेह की परम्परा भी चलती है। मित्रता का अनुबन्ध भी कई जन्मों तक चल सकता है। रागानुबन्ध और द्वेषानुबन्ध दोनों हो सकते हैं। हिंसा और वैर की बात कर्मवाद के संदर्भ में और राग-द्वेष बन्धन में बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है। इसलिए किसी से

कोई वैर हो जाये तो उससे खमत-खामणा करके बात को वहीं समाप्त कर देनी चाहिये।

जैन धर्म में संवत्सरी मैत्री और खमत-खामणा का संबंध चलता है, बहुत बढ़िया है। क्षमा कर दो, क्षमा मांग लो। आपस में व्यक्तिगत रूप में खमत-

खमत-खामणा की विधि का हम उपयोग करते रहें तो संभव है वैर-विरोध समाप्त हो जाये, मन हल्का पड़ जाये। वैर भाव को समाप्त कर अपनी आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करें एवं अहिंसा के मांग पर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए परमपूज्य कालूगणी के हाथ में वेदना के आसंग को व्याख्यायित किया।

पूज्यवर ने साध्वी काव्यलताजी को अठाई का प्रत्याख्यान करवाया। प्रकाश परमार, अरुणा मादरेचा एवं पीयूष दूगड़ ने अपनी तपस्या के पूज्यवर से प्रत्याख्यान ग्रहण किये। तनसुखलाल बैद ने अपनी कृति 'आचार्याजलि' पूज्यवर को अर्पित की। पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाया। प्रज्ञा चक्षु शांतिलाल चोरड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश-कुमारजी ने किया।

संयम से अहिंसा की दिशा में करें प्रस्थान : आचार्यश्री महाश्रमण



१० अगस्त २०२३

नन्दनवन, मुम्बई

महान मनोवैज्ञानिक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि गौतम स्वामी ने भगवान से प्रश्न पूछा- भन्ते! एक पुरुष दूसरे पुरुष की हत्या करता है। क्या वह पुरुष हनन करता हुआ दूसरे पुरुष का भी हनन करता है? उस पुरुष के सिवाय और किसी को भी मारता है क्या?

उत्तर दिया कि गौतम! जो पुरुष को मारने वाला है, वह उस पुरुष के साथ उसके शरीर में विद्यमान अन्य जीवों की भी हिंसा कर देता है। आदमी के शरीर में अन्य कई जीव-कृमियां आदि हो सकते हैं। उसके शरीर, मल-मूत्र अथवा खून आदि में रहने वाले कृमि आदि का भी नाश हो जाता है, इसलिए उस एक शरीर के आश्रित अन्य अनेक जीवों की हिंसा और उसके परिपार्श्व में भी अन्य कोई जीव हिंसा हो सकती है।

इसलिए वह एक आदमी के साथ अन्य जीवों का हंता होता है। इसी प्रकार आदमी कोई अन्य पशुओं को मारता है तो दूसरे जीवों की भी हिंसा हो सकती है।

एक आदमी किसी ऋषि-साधु की हत्या कर देता है, उसके साथ अनन्त जीवों की हिंसा और कर देता है। साधु व्रत में रहता है, पर उसकी हिंसा कर दी तो उसका वह भव तो पूरा हो गया, वह आत्मा अव्रत में चली गयी। उसे हिंसा के लिए खुला कर दिया तो अप्रत्यक्ष रूप में वह अनन्त जीवों की हिंसा करने का भागीदार बन गया है। साधु उपदेश देते हैं, तो कितने लोग हिंसा का त्याग कर देते हैं। अब वह साधु नहीं रहा। कितने लोग उसके उपदेश से समझ सकते थे पर अब वे उससे वंचित रह गये। वे उस साधु के उपदेश से अहिंसा के मार्ग पर जाने से वंचित रह गये।

इस तरह एक जीव की हिंसा करने से अप्रत्यक्ष रूप में कितने जीवों की हिंसा हो सकती है। आदमी का भाव हिंसा का है,

संयोग से वह प्राणी न भी मरे, तो भी वह भावों से पापी बन जाता है। हिंसा के चार अंग हो जाते हैं। (१) द्रव्यतः हिंसा है, भावतः हिंसा नहीं है। (२) भावतः हिंसा है, द्रव्यतः हिंसा नहीं है। (३) द्रव्यतः भी हिंसा है और भावतः भी हिंसा है। (४) न द्रव्यतः हिंसा है, न भावतः हिंसा है।

पूज्यवर ने अहिंसा के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि श्रावण मास चल रहा है, कम से कम जमीकंद-अनन्तकाय चीजों का तो प्रयोग न करें, संभव हो तो रात्रि भोजन न करें, प्रत्येक चीज में संयम रखें तो हिंसा से बचा जा सकता है।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का सुमधुर स्वर में विवेचना करते हुए पूज्य कालूगणी के जावरा प्रवास में उनके हाथ में हुई वेदना के प्रसंग को फरमाया।

पूज्यवर ने राजुल सांखला, मंजू बोहरा, संजय बोहरा, श्वेता बागरेचा व ममता सिंघवी को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

हिंगवाला घाटकोपर संघ से अनेक श्रावक पूज्यवर के श्रीचरणों में उपस्थित हुए। विपीन भाई, मुकेश भाई ने घाटकोपर में ज्यादा से ज्यादा विराजने की प्रार्थना हेतु निवेदन किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

मुनिश्री हेमराजजी का देवलोकगमन



:: जीवन परिचय ::

जन्म नाम	: हेमराज गंग
पिता का नाम	: नथमल गंग
माता	: गौरा देवी
पत्नी	: तोली देवी
दो पुत्र	: भंवरलाल, विनोदकुमार
दो पुत्रियां	: सुप्यार, रीना
जन्म	: वि. सं. 1992 माघ कृष्णा 30
जन्म स्थान	: करीमगंज, असम
निवासी	: श्रीडूंगरगढ़,
प्रवासी	: करीमगंज (कर्मक्षेत्र)
गृहस्थ जीवन	: 78 साल
दीक्षा	: 28 नवम्बर 2013, बीदासर में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा।
मुनि नाम	: मुनि हेमराज
साधु जीवन	: 10 वर्ष
चार चातुर्मास	: मुनि रमेशकुमारजी के साथ, तत्पश्चात् गुरुकुलवास में 5 चातुर्मास मुनि जितेन्द्रकुमारजी एवं अन्य संतों के साथ- चेन्नई से छापर 2022 तक
स्थिरवास	: 2022 से अंत तक छापर सेवा केंद्र में।
महाप्रयाण	: 10 अगस्त 2023 (द्वितीय श्रावण कृष्णा दशम 2080)
स्वलिखित पुस्तक	: 'गुरुकृपा', का लोकार्पण पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर कमलों से 15 जुलाई 2023 को।